17-सूरत-बनी इस्राईल

इस मक्की सूरत में '12' रूकू और 111 आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡۤ اَسۡرٰی بِعَبۡدِہٖ لَیۡلًا مِّنَ الۡمَسۡجِدِ الۡحَرَامِ اِلَی الۡمَسۡجِدِ الۡاَقۡصَا الَّذِیۡ بٰرَکۡنَا حَوۡلَہٗ لِنُرِیَہٗ مِنۡ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡبَصِیۡرُ ﴿۱﴾

आयत न० 01

वो ज़ात पाक है जो अपने (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को रात के वक़्त मस्जिदे हराम** (यानी मस्जिदे काबा) **से मस्जिदे अक़्सा** (यानी बैतुल मुक़द्दस) **तक ले गया जिसके आस पास हम ने** (दीनी और दुनियावी) **बरकतें रक्खी हैं** (दीनी बरकत यह है कि वहां बहुत से पैग़म्बर दफ़्न हैं और दुनिया की बरकत यह है कि वहां नहरें और बाग़ और पैदावार बहुत है) **ताकि हम उन को अपनी** (कुदरत की) **कुछ निशानियां दिखा दें** (जैसे इतनी बड़ी दूरी को बहुत थोड़े से वक़्त में तय कर लेना और सब पैग़म्बरों से मुलाक़ात और उन की बातें सुनना और आसमानों पर जाना और वहां की निशानियां देखना), **बेशक अल्लाह तआला बड़े सुनने वाले बड़े देखने वाले हैं** (क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों को सुनते और उन के हाल को देखते थे उस के हिसाब से उनको अपने नज़दीक वो रूतबा दिया जो किसी को नहीं मिला)**(01)**।

नोटः- इस आयत में मैराज के क़िस्से का ज़िक्र है जो हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ास इज़्ज़त और उन का ख़ास मोजिज़ा है। मस्जिदे काबा से मस्जिदे अक़्सा तक के सफ़र को इसरा कहते हैं और वहां से आसमानों की तरफ़ जो सफ़र हुआ उसे मैराज कहते हैं और यह कुरआन व हदीस से साबित है।

وَ اٰتَیۡنَا مُوۡسَی الۡکِتٰبَ وَ جَعَلۡنٰہُ ہُدًی لِّبَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ اَلَّا تَتَّخِذُوۡا مِنۡ دُوۡنِیۡ وَکِیۡلًا ؕ﴿۲﴾ ذُرِّیَّۃَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ
نُوۡحٍ ؕ اِنَّہٗ کَانَ عَبۡدًا شَکُوۡرًا ﴿۳﴾ وَ قَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ فِی الۡکِتٰبِ لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ وَ لَتَعۡلُنَّ
عُلُوًّا کَبِیۡرًا ﴿۴﴾ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىہُمَا بَعَثۡنَا عَلَیۡکُمۡ عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیۡ بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ فَجَاسُوۡا خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ وَ کَانَ
وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ﴿۵﴾ ثُمَّ رَدَدۡنَا لَکُمُ الۡکَرَّۃَ عَلَیۡہِمۡ وَ اَمۡدَدۡنٰکُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّ بَنِیۡنَ وَ جَعَلۡنٰکُمۡ اَکۡثَرَ نَفِیۡرًا ﴿۶﴾ اِنۡ
اَحۡسَنۡتُمۡ اَحۡسَنۡتُمۡ لِاَنۡفُسِکُمۡ ۟ وَ اِنۡ اَسَاۡتُمۡ فَلَہَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ الۡاٰخِرَۃِ لِیَسُوۡٓءٗا وُجُوۡہَکُمۡ وَ لِیَدۡخُلُوا
الۡمَسۡجِدَ کَمَا دَخَلُوۡہُ اَوَّلَ مَرَّۃٍ وَّ لِیُتَبِّرُوۡا مَا عَلَوۡا تَتۡبِیۡرًا ﴿۷﴾ عَسٰی رَبُّکُمۡ اَنۡ یَّرۡحَمَکُمۡ ۚ وَ اِنۡ عُدۡتُّمۡ عُدۡنَا ۘ
وَ جَعَلۡنَا جَہَنَّمَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ حَصِیۡرًا ﴿۸﴾

आयत न० 02 से 08

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को किताब** (यानी तौरेत) **दी और हम ने उस** (किताब) **को बनी इस्राईल के लिए हिदायत** (का वास्ता) **बनाया** (जिसमें और हुक्मों के साथ यह तौहीद का बड़ी शान वाला हुक्म भी था) **कि तुम मेरे सिवा किसी को** (अपना) **काम बनाने वाला मत बनाओ(02) ऐ उन लोगों की औलाद जिनको हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **के साथ** (कशती में) **सवार किया था** (उस नेमत को याद करो कि अगर हम उन को कशती पर सवार करके न बचाते तो आज तुम उन की नस्ल में कहां होते और नेमत को याद करके उस का शुक्र अदा करो जिसमें बड़ी चीज़ तौहीद है)**, वो** (नूह अलैहिस्सलाम) **बड़े शुक्र करने वाले बन्दे थे** (बस जब पैग़म्बर शुक्र करते रहे तो तुम कैसे उस को छोड़ सकते हो)(03) **और हमने बनी इसराईल को किताब में यह बात** (पहले ही) **बता दी थी कि तुम** (मुल्क शाम की) **ज़मीन में दो बार** (गुनाहों की कसरत से) **फ़साद मचाओगे** (एक बार मूसवी शरीअत की मुख़ालफ़त और दूसरी बार ईसवी शरीअत की मुख़ालफ़त) **और दूसरों पर भी बड़ा ज़ोर चलाओगे** (यानी जुल्म व ज़्यादती करोगे और दोनो बार सख़्त सज़ाओं में पकड़े जाओगे)(04) **फिर जब उन दो क़िस्सों में से पहली बार का वक़्त आएगा तो हम तुम पर अपने ऐसे बन्दों को हावी कर देंगे जो बड़े जंगजू** (और लड़ाकू) **होंगे फिर वो** (तुम्हारे) **घरों में घुस जाएंगे** (और तुम को क़त्ल व क़ैद और बर्बाद कर देंगे)**, और यह** (सज़ा का) **एक वादा है जो ज़रूर होकर रहेगा(05) फिर** (जब तुम अपने किये पर पछताओगे और तौबा करोगे तो) **हम उन पर तुम्हें हावी कर देंगे और माल और बेटों से** (जो कि क़ैद और बर्बाद किये गये थे) **हम**

तुम्हारी मदद करेंगे (यानी ये चीज़ें तुम को वापस मिल जाएंगी जिससे तुम्हें ताक़त पहुंचेगी) **और हम तुम्हारे गिरोह को बढ़ा देंगे(06)** (और उस किताब में नसीहत के लिए यह भी लिखा था कि) **अगर** (आगे को) **अच्छे काम करते रहोगे तो अपने ही नफ़े के लिए अच्छे काम करोगे** (यानी दुनिया व आख़रत में उस का नफ़ा होगा), **और अगर** (फिर) **तुम बुरे काम करोगे तो भी अपने ही लिए** (बुराई करोगे फिर सज़ा होगी जैसा कि ऐसा ही हुआ जिस का बयान आगे है), **फिर जब** (उन दोनो बार के फ़साद में से) **आख़री बार का वक़्त आएगा** (और उस वक़्त तुम ईसवी शरीअत की मुख़ालफ़त करोगे) **तो फिर हम दूसरों को तुम पर हावी कर देंगे ताकि** (वो तुम्हें मार-मार कर) **तुम्हारा चेहरा बिगाड़ दें और जिस तरह वो** (पहले) **लोग मस्जिद** (बैतुल मुक़द्दस) **में** (लूटमार के साथ) **घुसे थे ये** (बाद वाले) **लोग भी उसमें घुस जाएंगे और जिस-जिस चीज़ पर उन का ज़ोर चले सब को** (हलाक व) **बर्बाद कर देंगे(07)** (और उस किताब में यह भी लिखा था कि उस दूसरी बार के बाद जब मुहम्मदी शरीअत का दौर हो तो तुम मुख़ालफ़त और गुनाहों से बाज़ आकर मुहम्मदी शरीअत पर चलो तो) **उम्मीद** (यानी वादा) **है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करे** (और तुम को बदनसीबी व रूसवाई से निकाल दे) **और अगर तुम फिर वो ही** (बुराई) **करोगे तो हम भी फिर वो ही** (सज़ा का बरताव) **करेंगे,** (जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में उन्होंने आप की मुख़ालफ़त की तो फिर क़त्ल व क़ैद और ज़लील हुए यह तो दुनिया की सज़ा है), **और** (आख़रत में) **हम ने जहन्नम को** (ऐसे) **काफ़िरों का जेल ख़ाना बना ही रक्खा है(08)।**

नोटः- सारे ही इन्सान अल्लाह ही के बन्दे हैं मगर बिना ईमान के मक़बूल बन्दे नहीं होते जिन्हें अल्लाह वाला कहा जा सके। और मक़बूल बन्दों में सबसे ऊंचा दर्जा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का है जिन्हें सूरत के शुरू में अल्लाह ने अपना बन्दा कहा है।

اِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ یَهْدِیْ لِلَّتِیْ هِیَ اَقْوَمُ وَ یُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِیْنَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا
كَبِیْرًاۙ۝۹ وَّ اَنَّ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا۠۝۱۰ وَ یَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ
بِالْخَیْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا۝۱۱ وَ جَعَلْنَا الَّیْلَ وَ النَّهَارَ اٰیَتَیْنِ فَمَحَوْنَاۤ اٰیَةَ الَّیْلِ وَ جَعَلْنَاۤ اٰیَةَ النَّهَارِ
مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَ الْحِسَابَ ؕ وَ كُلَّ شَیْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِیْلًا۝۱۲ وَ كُلَّ
اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓىِٕرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ ؕ وَ نُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا۝۱۳ اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ؕ كَفٰى بِنَفْسِكَ

ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝١٤ مَّنِ ٱهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِى لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝١٥

आयत न० 09 से 15

बेशक यह क़ुरआन ऐसा रास्ता दिखाता है जो बिल्कुल सीधा है (यानी इस्लाम) **और** (उस तरीक़े के मानने वालों और न मानने वालों का सवाब और सज़ा भी बताता है कि) **उन ईमान वालों को जो नेक काम करते हैं यह ख़ुशख़बरी देता है कि उन को बड़ा भारी सवाब मिलेगा(09) और यह** (भी बताता है) **कि जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते हमने उन के लिए एक दर्दनाक सज़ा तैयार कर रक्खी है(10) और** (बाज़) **इन्सान** (जैसे काफ़िर हैं) **बुराई** (यानी अज़ाब) **की ऐसे दुआ करता है जिस तरह भलाई की दुआ** (की जाती है), **और इन्सान कुछ** (तबीयत से ही) **जल्द बाज़** (होता है कि कभी-कभी जल्दबाज़ी में ऐसी दुआ मांग लेता है जो उसके लिए बर्बादी और तबाही का सामान हो सकती) **है(11) हमने रात और दिन को** (अपनी क़ुदरत की) **दो निशानियां बनाया सो रात की निशानी** (यानी रात) **को हमने धुन्दला** (यानी अन्धेरी) **बना दिया और दिन की निशानी को रौशन** (और चमकदार) **बना दिया** (कि उसमें सब चीज़ें आसानी से दिखाई दें) **ताकि** (दिन में) **अपने रब की रोज़ी तलाश करो और** (रात और दिन के आने जाने में) **बरसों** (और सालों) **की गिनती और** (दूसरे छोटे-छोटे) **हिसाब जान सको, और हमने हर चीज़ को अच्छी तरह खोल कर बयान किया है(12) और हमने हर इन्सान का काम** (अच्छा हो या बुरा) **उसके गले का हार बना रक्खा** (है यानी हर आदमी का आमाल नामा उसके साथ रहता है जिसमें उसका हर काम लिखा जाता) **है, और** (फिर) **क़ियामत के दिन उस का आमाल नामा उसके** (देखने के) **वास्ते निकाल कर सामने कर देंगे जिस को वो खुला हुआ देख लेगा(13)** (और उससे कहा जाएगा कि ले) **अपना आमाल नामा** (ख़ुद) **पढ़ ले, आज तू अपने आप ही अपना हिसाब जांचने के लिए काफ़ी है** (यानी इसकी ज़रूरत नहीं कि तेरे कामों को कोई दूसरा आदमी गिना दे बल्कि तू ख़ुद ही अपना आमाल नामा पढ़ता जा और हिसाब लगाता जा कि तुझे कितनी सज़ा और सवाब मिलना चाहिए)(14) **जो आदमी** (दुनिया में सीधी) **राह पर चलता है वो अपने ही नफ़े के लिए चलता है, और जो आदमी बेराही अपनाता है वो भी अपने ही नुक़सान के लिए बेराह होता है, और** (वो उसका अन्जाम भुगतेगा किसी का कुछ नुक़सान नहीं क्योंकि हमारा क़ानून यह है कि) **कोई आदमी किसी** (के गुनाह) **का बोझ न उठाएगा, और हम**

(कभी) **सज़ा नहीं देते जब तक किसी पैग़म्बर को** (उसकी हिदायत के लिए) **नहीं भेज लेते**(15)।

नोटः- (1) पैग़म्बरों के भेजने से मुराद उनकी दावत और नसीहत का पहुंच जाना है जैसे भी पहुंचे।
(2) तफ़सीर मज़हरी में लिखा है कि मुशरिकों और काफ़िरों की औलाद जो बालिग़ होने से पहले मर जाएं उनको अज़ाब न होगा क्योंकि मां बाप के कुफ़्र से वो सज़ा के हक़दार नहीं होंगे।

وَ اِذَاۤ اَرَدْنَاۤ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝١٦ وَ كَمْ
اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝١٧ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ
عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝١٨ وَ مَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَ
سَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝١٩ كُلًّا نُّمِدُّ هٰۤؤُلَآءِ وَ هٰۤؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ؕ وَ مَا
كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝٢٠ اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ وَ لَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّ اَكْبَرُ
تَفْضِيْلًا ۝٢١

आयत न० 16 से 21

और जब हम किसी बस्ती को (लोगों के बुरे कामों की वजह से) **हलाक करना चाहते हैं तो** (उसको पैग़म्बर भेजने से पहले हलाक नहीं करते बल्कि पहले किसी पैग़म्बर के वास्ते से) **उस** (बस्ती) **के ख़ुशहाल** (मालदार) **लोगों को** (ख़ास कर और दूसरे आम लोगों को भी ईमान व ताबेदारी का) **हुक्म देते हैं फिर जब वो लोग** (कहना नहीं मानते बल्कि) **वहां शरारतें करते हैं तब उन पर बात पूरी हो जाती है फिर उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं**(16) **और** (इसी तरह) **हमने बहुत सी उम्मतों को नूह** (अलैहिस्सलाम) **के** (ज़माने के) **बाद** (उनके कुफ़्र व गुनाह की वजह से) **हलाक किया है** (जैसे आद व समूद), **और आप का रब अपने बन्दों के गुनाहों का जानने वाला देखने वाला काफ़ी** (है तो जैसा किसी क़ौम का गुनाह होता है वैसी सज़ा देता) **है**(17) **जो आदमी** (अपने नेक कामों से सिर्फ़) **दुनिया** (के नफ़े) **की नीयत रक्खेगा** (चाहे इस लिए कि वो आख़रत को नहीं मानता या इसलिए कि आख़रत से बेपरवा है) **हम ऐसे आदमी को दुनिया ही में जितना चाहेंगे** (फिर यह भी सब के लिए नहीं बल्कि) **जिस के लिए चाहेंगे अभी दे देंगे** (यानी दुनिया ही में कुछ बदला मिल जाएगा) **फिर** (आख़रत में कुछ न मिलेगा बल्कि वहां) **हम उसके लिए जहन्नम तैयार रक्खेंगे वो उसमें बुरी हालत में रूसवा होकर दाख़िल होगा**(18) **और जो**

आदमी (अपने नेक कामों में) **आख़रत** (के सवाब) **की नीयत रक्खेगा और उस के लिए जैसी कोशिश करनी चाहिए वैसी ही कोशिश भी करेगा** (मतलब यह कि हर कोशिश भी फ़ाइदा नहीं देती बल्कि कोशिश सिर्फ़ वो ही फ़ाइदा देती है जो शरीअ़त और सुन्नत के हिसाब से हो) **शर्त यह है कि वो आदमी मोमिन भी हो सो ऐसे लोगों की यह कोशिश कामयाब होगी**(19) (और काफ़िरों को दुनिया की नेमतें मिलना उन की कामयाबी की निशानी नहीं क्योंकि) **आप के रब की देन** (और महरबानी ऐसी है कि दुनिया) **में से तो हम इन** (अपनों) **की भी मदद करते हैं और उन** (ग़ैरों) **की भी** (मदद करते हैं), **और आप के रब की देन** (दुनिया में तो किसी पर) **बन्द नहीं**(20) **आप देख लीजिए कि हमने** (इस दुनिया की महरबानी में ईमान व कुफ़्र की शर्त के बिना) **एक को दूसरे पर किस तरह बढ़ा रक्खा है** (यहां तक कि बहुत से काफ़िर बहुत से मोमिनों से ज़्यादा नेमत व दौलत रखते हैं क्योंकि इन चीज़ों की अल्लाह के यहां हैसियत नहीं), **और यक़ीन रक्खो कि आख़रत** (जो नेकों के लिए है वो) **दर्जों में भी बहुत बड़ी है और बड़ाई में भी कहीं ज़्यादा है** (इसलिए उसी का ध्यान और उसके लिए कोशिश करनी चाहिए)(21)।

नोटः- यहां मालूम कि अल्लाह के यहां कामयाबी की चार शर्ते हैं। अव्वल नीयत का सही होना यानी ख़ालिस सवाब की नीयत हो दूसरे नेक काम में कोशिश करना तीसरे उस काम का शरीअत और सुन्नत के हिसाब से होना वर्ना वो दीन का काम न होकर बिदअत हो जाएगा और चौथी शर्त जो सबसे ख़ास और सब का मदार है वो अक़ीदे का सही होना यानी ईमान है कि इन शर्तो के बिना कोई काम अल्लाह के यहां क़ुबूल नहीं।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ﴿۲۲﴾ وَ قَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَ بِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا
كَرِيْمًا ﴿۲۳﴾ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ﴿۲۴﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا
فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ﴿۲۵﴾

आयत न० 22 से 25

अल्लाह के साथ किसी और को माबूद मत बनाओ (यानी शिर्क न करो) **वर्ना तुम बुरे हाल बेयारो मददगार होकर बैठ रहोगे**(22) **और तुम्हारे रब ने यह हुक्म दिया है कि सिवाए**

उस (सच्चे माबूद) **के किसी की इबादत मत करो और तुम अपने मां बाप के साथ अच्छा सलूक किया करो, अगर** (वो) **तेरे पास** (हों और) **उनमें से एक या दोनो बुढ़ापे** (की उम्र) **को पहुंच जाएं** (जिस वजह से ख़िदमत की ज़रूरत हो और जब कि मन से उन की ख़िदमत करना भारी लगता हो) **सो** (उस वक़्त भी इतना अदब करो कि) **उन को कभी** (हां से) **हूं भी मत कहना और न उन को झिड़कना और उनसे अच्छी तरह अदब से बात करना(23) और उनके सामने मुहब्बत से बहुत छोटा बनकर** (यानी लाचारी के साथ) **झुके रहना और** (उनके लिए अल्लाह तआ़ला से) **ऐसे दुआ़ करते रहना कि या रब मेरे इन दोनो पर रहम कीजिए जैसा इन्होंने मुझ को बचपन** (की उम्र) **में पाला परवरिश किया है(24)** (और दिल में भी उनका अदब रखना और कहना मानने का इरादा रखना क्योंकि) **तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों की बात को अच्छी तरह जानता है, अगर तुम** (असलीयत में दिल ही से) **नेक** (और ताबेदार) **हो** (और ग़लती से कोई चूक हो जाए और फिर पछता कर तौबा कर लो) **तो वो तौबा करने वालों की ग़लती मुआफ़ कर देता है(25)।**

नोटः- एक हदीस में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि औलाद पर मां बाप का क्या हक़ है आपने फ़रमाया कि ''वो दोनो ही तेरी जन्नत या दोज़ख़ हैं'' मतलब यह है कि उनकी ताबेदारी व ख़िदमत जन्नत में ले जाती है और उनकी बेअदबी और नाराज़ी दोज़ख़ में। (इब्ने माजा)

एक हदीस में है कि ''जो ख़िदमत गुज़ार बेटा अपने मां बाप पर मुहब्बत व रहमत से नज़र डालता है तो हर नज़र के बदले में एक मक़बूल हज का सवाब पाता है'' लोगों ने पूछा अगर वो दिन में सौ बार इस तरह नज़र करे तो हुज़ूर ने फ़रमाया हां सौ बार भी (हर नज़र पर ये ही सवाब मिलता रहेगा) अल्लाह तआ़ला बड़ा है (उसके ख़ज़ाने में कोई कमी नहीं आती)।(बैहक़ी)

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝٢٦ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَ
كَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝٢٧ وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا ۝٢٨ وَ
لَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝٢٩ اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝

आयत न० 26 से 30

और रिशतेदार को उस का हक़ (माली और दूसरा) **देते रहना और ज़रूरत मन्द** (ग़रीब) **और मुसाफ़िर को भी** (उन के हक़) **देते रहना और** (माल को) **बेमौक़ा मत उड़ाना**(26) **बेशक बेमौक़ा माल उड़ाने वाले शैतान के भाई बन्द** (हैं यानी उनके जैसे होते) **हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है** (कि अल्लाह तआला ने उसको समझ की दौलत दी उसने उस समझ की दौलत को अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में ख़र्च किया इसी तरह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वालों को अल्लाह तआला ने माल की दौलत दी मगर वो उसको अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में ख़र्च करते हैं)(27) **और अगर** (किसी वक़्त तुम्हारे पास उन लोगों को देने के लिए माल न हो और इसलिए) **तुम को उस रोज़ी के इन्तिज़ार में जिसकी अपने रब से उम्मीद हो** (उसके न आने तक) **उनसे मुंह फेरना पड़े तो** (इतना ध्यान रखना कि) **उन से नर्मी की बात कह देना** (यानी तसल्ली देते हुए उन से वादा कर लेना कि इन्शाअल्लाह तआला कहीं से आएगा तो देंगे दिल दुखाने वाला जवाब मत देना)(28) **और न तो अपना हाथ गर्दन ही से बान्ध लो** (कि बहुत कंजूसी से हाथ ख़र्च करने से बिल्कुल रोक लो) **और न बिल्कुल ही खोल देना चाहिए** (कि ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करके फ़ुज़ूल ख़र्ची की जाए) **वर्ना रूसवा होकर** (और) **ख़ाली हाथ होकर बैठ रहोगे**(29) (और किसी की ग़रीबी पर इतना असर लेना कि अपने को परीशानी में डाल लो कोई समझदारी की बात नहीं क्योंकि) **बेशक तेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और वो ही** (जिस पर चाहे) **कमी कर देता है, बेशक वो अपने बन्दों** (की हालत और उनकी भलाई) **को अच्छी तरह जानता है देखता है** (इसका यह मतलब नहीं कि कोई किसी का ग़म न करे उसके लिए कोशिश न करे बल्कि मतलब यह है कि सब की ज़रूरतें पूरी करना इन्सान के बस में नहीं यह काम तो सिर्फ़ दुनिया के मालिक का है इसलिए इन्सान का काम तो सिर्फ़ इतना ही है कि बीच की चाल से काम ले न ख़र्च करने के मौक़े में कंजूसी करे और न इतना ख़र्च करे कि कल को ख़ुद ही फ़क़ीर हो जाए और बीवी बच्चे जिनके हक़ उसके ज़िम्मे हैं उनके हक़ अदा न हो सकें और बाद में पछताना पड़े)(30)।

नोटः- इमाम क़ुरतबी रह० ने फ़रमाया कि हराम और नाजाइज़ काम में तो एक रूपया ख़र्च करना भी फ़ुज़ूल ख़र्ची है। और जाइज़ ज़रूरतों में हद से ज़्यादा ख़र्च करना जिसके आगे मुहताज फ़क़ीर हो जाने का ख़तरा हो जाए यह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल है। हां अगर कोई आदमी असल

माल को बचाते हुए उसके मुनाफ़े को अपनी जाइज़ ख़ाहिशों में गुन्जाइश के साथ ख़र्च करता रहे तो वो फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं। (क़ुरतबी)

وَلَا تَقْتُلُوٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝٣١ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى
اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ؕ وَسَآءَ سَبِيْلًا ۝٣٢ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِىْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ
جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ فِّى الْقَتْلِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝٣٣

आयत न० 31 से 33

और अपनी औलाद को ग़रीबी के डर से क़त्ल न करो (क्योंकि सब को रोज़ी देने वाले हम हैं), **हम उन को भी रोज़ी देते हैं और तुम को भी** (अगर रोज़ी देने वाले तुम होते तो ऐसी बातें सोचते), **बेशक उन का क़त्ल करना बड़ा भारी गुनाह है(31) और बदकारी के पास भी मत जाओ** (यानी ऐसी बातों से भी बचो) **बेशक वो** (अपने में) **बड़ी बेशर्मी की बात है, और** (दूसरी बुराइयों की वजह से भी) **बुरी राह** (है क्योंकि इस की वजह से दुशमनी और झगड़े फ़साद होते हैं और नस्लों में बिगाड़ आता) **है(32) और जिस आदमी** (के क़त्ल करने) **को अल्लाह तआ़ला ने हराम किया है उस को क़त्ल मत करो हां मगर हक़ पर** (क़त्ल करना ठीक है यानी जब शरीअत के किसी हुक्म से क़त्ल करना वाजिब या जाइज़ हो जाए तो वो हराम नहीं), **और जो आदमी नाहक़ क़त्ल किया जाए तो हम ने उसके** (असली) **वारिस** (या हाकिम) **को हक़ दिया है** (बदला लेने का) **सो उस को क़त्ल करने के बारे में** (शरीअत की) **हद से आगे न बढ़ना चाहिए** (यानी क़ातिल पर क़त्ल का पक्का सबूत मिले बिना क़त्ल न करे और उसके रिशतेदारों को जो क़त्ल में शरीक नहीं सिर्फ़ बदले के जोश से क़त्ल न करे और क़ातिल को भी सिर्फ़ क़त्ल करे नाक कान या हाथ पैर न काटे क्योंकि) **वो आदमी** (बदला लेने में हद से न बढ़ने की सूरत में तो शरीअत से) **अल्लाह की मदद के क़ाबिल है** (और हद से बढ़ा तो दूसरा मदद का हक़दार हो जाएगा यानी अब इसको इसकी ग़लती की सज़ा होगी)(33)।

नोटः- आजकल लोग बढ़ती आबादी से घबरा कर आबादी घटाने के प्रोग्राम बना रहे हैं इसकी वजह भी ये ही है कि रोज़ी का ज़िम्मेदार अपने आप को समझ लिया है इसमें औलाद को क़त्ल करने के बराबर गुनाह न सही मगर इसके बुरा होने में कोई शक नहीं

हदीसः- हदीस में है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें शादी शुदा बदकार पर लानत करती हैं और जहन्नम में ऐसे लोगों की शर्मागाहों से ऐसी सख़्त बदबू फैलेगी कि जहन्नम वाले भी उससे परीशान होंगे और आग के अज़ाब के साथ उनकी रूसवाई जहन्नम में भी होती रहेगी।

एक हदीस में है कि जिस आदमी ने किसी मुसलमान के क़त्ल में क़ातिल की मदद एक बात से भी की तो हश्र के मैदान में जब वो अल्लाह तआला के सामने पेश होगा उसके माथे पर लिखा होगा ''यह आदमी अल्लाह तआला की रहमत से मायूस कर दिया गया है। (मज़हरी)

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۪ وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُوْلًا ﴿٣٤﴾ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾ وَلَا تَقْفُ مَا
لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ؕ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿٣٦﴾ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ
مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾ كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا ﴿٣٨﴾

आयत न० 34 से 38

और यतीम के माल के पास न जाओ (यानी उसके माल को ख़र्च न करो) **मगर ऐसे तरीक़े से जो कि** (शरीअत से जाइज़ और उस के हक़ में) **अच्छा है यहां तक कि वो अपनी जवानी को पहुंच जाए, और** (जाइज़) **एहद को पूरा किया करो, बेशक एहद की क़ियामत में पूछताछ होने वाली** (है एहद में वो सभी एहद दाख़िल हैं जो बन्दे ने अपने अल्लाह से किये हैं और वो एहद भी जो किसी इन्सान से किया) **है(34) और** (नापने की चीज़ों को) **जब नाप कर दो तो पूरा नापो और** (तोलने की चीज़ों को) **सही तराज़ू से तौल कर दो, यह** (अपने आप में भी) **अच्छी बात है और अन्जाम भी उस का अच्छा** (है आख़रत में तो सवाब और दुनिया में नेकनामी की शोहरत जिससे तरक़्क़ी होती) **है(35) और जिस बात की तुम को सही जानकारी न हो** (उसे सच समझ कर) **उस पर अमल मत करो,** (क्योंकि) **कान और आंख और दिल हर आदमी से उन सब की** (क़ियामत के दिन) **पूछ होगी** (कि आंख और कान से क्या काम लिया वो काम अच्छे थे या बुरे और बेदलील बात का ध्यान दिल में क्यों जमाया)(36) **और ज़मीन पर इतराता हुआ मत चल** (क्योंकि) **तू** (ज़मीन पर ज़ोर से पैर रख कर) **न ज़मीन को फाड़ सकता है और न** (अपने

बदन को तान कर) **पहाड़ों की ऊंचाई को पहुंच सकता** (है फिर इतराना बेकार) **है(37) ये सारे** (गिनाए) **बुरे काम तेरे रब के नज़दीक** (बिल्कुल) **ना पसन्द हैं(38)।**

नोटः- यतीमों के माल की हिफ़ाज़त और इन्तिज़ाम जिन के ज़िम्मे है उन के लिए ज़रूरी है कि उनमें बड़ी अहतियात से काम लें सिर्फ़ यतीमों की भलाई को देख कर ख़र्च करें अपनी मर्ज़ी या बेफ़िक्री से ख़र्च न करें जब तक उन में इतनी समझ न आजाए कि अपने माल की ख़ुद हिफ़ाज़त कर सकें जो 15 से 18 साल तक की उम्र है।

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ؕ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِىْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ﴿۳۹﴾
اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ اِنَاثًا ؕ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿۴۰﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِىْ هٰذَا
الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ؕ وَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿۴۱﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِى الْعَرْشِ
سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا ﴿۴۳﴾ تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ
اِنْ مِّنْ شَىْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰـكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾

आयत न० 39 से 44

(ऐ पैग़म्बर) **ये वो हिकमत की बातें हैं जो अल्लाह तआ़ला ने आप पर वही के वास्ते से भेजी हैं, और** (ऐ इन्सान) **अल्लाह सच्चे के साथ किसी और को माबूद न बना वर्ना तू रूसवा होकर धक्के देकर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा(39) तो क्या** (फिर भी ऐसी बातों को मानते हो जो तौहीद के ख़िलाफ़ हैं जैसे यह कि) **तुम्हारे रब ने तुम को तो बेटे चुन कर दिये और ख़ुद अपने लिए फ़रिशतों को बेटियां बना लिया** (है जैसा कि अरब के जाहिल फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहा करते थे जो दो वजह से ग़लत है एक तो अल्लाह के औलाद मानना फिर औलाद भी लड़कियां जिन को लोग अपने लिए पसन्द नहीं करते बेकार समझते हैं जो अल्लाह तआ़ला के बारे में ऐब की बात) **है, बेशक तुम बड़ी भारी बात कहते हो(40) और** (इन शिर्क की बातों को) **हमने कुरआन में तरह-तरह से बयान कर दिया है ताकि अच्छी तरह समझ लें,** (मगर इसके बावजूद तौहीद से) **उन को नफ़रत ही बढ़ती जाती है(41) आप** (शिर्क के ग़लत होने के बारे में उन से) **कहिए कि अगर उस** (सच्चे अल्लाह) **के साथ और ख़ुदा भी** (शरीक) **होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो इस हालत में आसमान वाले** (सच्चे अल्लाह) **तक उन्होंने** (यानी दूसरे

माबूदों ने चढ़ाई का) **रास्ता तलाश कर लिया होता** (और जब ख़ुदाओं में जंग होती तो दुनिया का काम कैसे चलता इससे साबित हुआ कि अल्लाह एक है)(42) **ये लोग जो कुछ कहते हैं अल्लाह तआ़ला उससे पाक और उससे बहुत ऊंचा बड़े दर्जे वाला है**(43) (वो ऐसा पाक है कि) **सातों आसमान और ज़मीन और जितने** (फ़रिशते, इन्सान और जिन्नात) **उन में** (मौजूद) **हैं** (सब के सब ज़बान से या हाल से) **उस की पाकी बयान कर रहे हैं, और** (ज़मीन व आसमान की) **कोई चीज़ ऐसी नहीं जो तारीफ़ के साथ उस की तस्बीह न पढ़ती हो लेकिन तुम लोग उन की तस्बीह** (को) **समझते नहीं हो, बेशक वो बड़ा सहार वाला बड़ा मुआफ़ करने वाला है**(44)।

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह मोजिज़ा कि आपकी मुट्ठी में कंकरियों का तस्बीह करना सहाबा किराम ने कानों से सुना ऐसे ही आप के साथ खाना खाते हुए सहाबा ने खाने की तसबीह को सुना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं उस पत्थर को पहचानता हूं जो पैग़म्बरी मिलने से पहले मुझे सलाम किया करता था और मैं अब भी उस को पहचानता हूं। कुछ हज़रात ने कहा कि इसमे मुराद हजरे असवद है। (मुस्लिम शरीफ़)

وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿۴۵﴾ وَّ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿۴۶﴾ نَحْنُ
اَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ اِذْ يَسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ وَ اِذْ هُمْ نَجْوٰٓى اِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا
مَّسْحُوْرًا ﴿۴۷﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۴۸﴾

आयत न० 45 से 48

और (ये लोग जो इतनी साफ़ दलीलों को भी नहीं मानते तो वजह उसकी यह है कि) **जब आप** (तबलीग़ के लिए) **कुरआन पढ़ते हैं तो हम आप के और उन लोगों के बीच एक छुपा हुआ पर्दा डाल देते हैं जो आख़रत पर ईमान नहीं रखते**(45) (और) **हम उन के दिलों पर** (ऐसा) **पर्दा डाल देते हैं कि वो इस** (कुरआन के मतलब) **को समझते नहीं और उनके कानों में बोझ डाल देते हैं** (जिससे वो हिदायत की बात सुनते नहीं मतलब यह है कि वो सुनने का इरादा ही नहीं करते जिससे वो आप की पैग़म्बरी की शान को पहचान सकें), **और जब आप कुरआन में**

सिर्फ़ अपने रब (की ख़ूबियों) **का ज़िक्र करते हैं** (और ये लोग जिन माबूदों की इबादत करते हैं उनमें ये ख़ूबियां हैं नहीं तो वो लोग अपनी नासमझी की वजह से इससे) **नफ़रत करते हुए पीठ फेर कर चल देते हैं(46) जिस वक़्त ये लोग आप की बात कान लगा कर सुनते हैं तो हम अच्छी तरह जानते हैं जिस वजह से ये** (क़ुरआन को) **सुनते हैं** (यानी ऐतराज़ और ताना कशी करने के लिए) **और जिस वक़्त ये लोग** (क़ुरआन सुनने के बाद) **आपस में छुपकर बातें करते हैं** (हम उस को भी अच्छी तरह जानते हैं) **जब कि ये ज़ालिम लोग** (अपनी बिरादरी के मुसलमानों से) **यह कहते हैं कि तुम लोग** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ लग गये हो) **बस ऐसे आदमी का साथ दे रहे हो जिस पर जादू का** (ख़ास) **असर** (यानी जुनून का) **हो गया** (है यानी ये जो ऐसी बातें करते हैं तो जुनून हो गया) **है(47)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रा) **आप देखिए तो ये लोग आप के बारे में कैसी कैसी बातें बनाते हैं सो ये लोग** (बिल्कुल ही) **गुमराह हो गये तो** (अब सच्चाई का) **रास्ता नहीं पा सकते** (क्योंकि ऐसी हटधर्मी और ज़िद और फिर अल्लाह के पैग़म्बर के साथ ऐसा बरताव इससे इन्सान की समझ जाती रहती है)(48)।

नोटः- जो लोग क़ुरआन की आयतों में सोचते समझते नहीं बल्कि उनसे नफ़रत करते और हंसी उड़ाते हैं उनको इस इल्म से अन्धा कर दिया गया है इसलिए ये बदनसीब ईमान नहीं लाते।

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿٤٩﴾ قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا ﴿٥٠﴾ اَوْ
خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ؕ قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ اِلَيْكَ
رُءُوْسَهُمْ وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ؕ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا ﴿٥١﴾ يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَ تَظُنُّوْنَ
اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٥٢﴾ وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ
لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ؕ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ؕ وَ مَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
وَكِيْلًا ﴿٥٤﴾ وَ رَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ لَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ
زَبُوْرًا ﴿٥٥﴾

आयत न० 49 से 55

और ये लोग कहते हैं कि जब हम (मरकर) **हड्डियां और** (हड्डियों का भी) **चूरा हो**

जाएंगे तो क्या (इसके बाद क़ियामत में) **हम फिर से पैदा और ज़िन्दा किये जाएंगे** (यानी एक तो मरकर ज़िन्दा होना ही मुश्किल है फिर जब कि जिस्म भी चूरा-चूरा होकर बिखर जाए तो उसके ज़िन्दा होने को कौन मान सकता है)(49) **आप** (उनके जवाब में) **कह दीजिए कि** (चाहे) **तुम पत्थर या लोहा बन जाओ(50) या और कोई ऐसी चीज़ बन कर देख लो जिसका तुम्हारे जी में** (ज़िन्दा होना) **और मुश्किल है** (फिर भी तुम्हें ज़िन्दा कर दिया जाएगा इस पर) **वो पूछेंगे कि वो कौन है जो दोबारा हम को ज़िन्दा करेगा, आप कह दीजिए वो ही जिसने तुम को पहली बार पैदा किया था,** (फिर) **आप के आगे सर हिलाकर कहेंगे कि** (अच्छा यह बताइये कि) **यह** (ज़िन्दा होना) **कब होगा, आप कह दीजिए कि शायद यह** (वक़्त) **नज़दीक ही आ पहुंचा हो(51) यह उस दिन होगा कि अल्लाह तआला तुम को** (ज़िन्दा करने और हश्र के मैदान मे जमा करने के लिए फ़रिशते के वास्ते से) **पुकारेगा और तुम** (मजबूर होकर) **उस की हम्द** (व सना) **करते हुए चले आओगे** (यानी ज़िन्दा भी हो जाओगे और हश्र के मैदान में जमा भी हो जाओगे मगर उस वक़्त हम्दो सना पर कोई सवाब नहीं) **और** (उस दिन की सख़्ती देख कर यह हाल हो जाएगा कि) **तुम यह सोचोगे कि तुम बहुत ही कम** (दिनों दुनिया में) **रहे थे** (क्योंकि आराम के दिन इन्सान को मुसीबत पड़ने के वक़्त बहुत कम लगा करते हैं)(52) **और आप मेरे** (मुसलमान) **बन्दों से कह दीजिए कि** (अगर काफ़िरों को जवाब दें) **तो ऐसी बात कहा करें जो अच्छी हो** (यानी उसमें बुरा भला और सख़्त और भड़काने वाली बात न हो, क्योंकि) **शैतान** (सख़्त बात कहलवाकर) **लोगों में झगड़ा** (फ़साद) **करवा देता है, सचमुच शैतान इन्सान का खुला दुशमन** (है और सख़्त बातों से कोई फ़ाइदा भी नहीं होता) **है(53) तुम सब का हाल तुम्हारा रब अच्छी तरह जानता** (है कि कौन किस क़ाबिल) **है,** (बस) **अगर वो चाहे तो तुम** (में से जिस) **पर** (चाहे) **रहम कर दे** (यानी हिदायत कर दे) **या वो अगर चाहे तो तुम** (में से जिस) **को** (चाहे) **अज़ाब देने लगे** (यानी उस को तौफ़ीक़ और हिदायत न दे)**, और हमने आप** (तक) **को उन** (की हिदायत) **का ज़िम्मेदार बनाकर नहीं भेजा** (और जब पैग़म्बर होने के बावजूद आप ज़िम्मेदार नहीं बनाए गये तो दूसरों की तो बात क्या इसलिए किसी के सर होना और सख़्ती करना बेकार है)(54) **और आप का रब अच्छी तरह जानता है उन को** (भी) **जो कि आसमानों में हैं** (यानी फ़रिशते) **और** (उन को भी जो कि) **ज़मीन में हैं** (यानी इन्सान और जिन्नात, मतलब यह है कि हम अच्छी तरह जानते हैं कि उनमें से किस को पैग़म्बर बनाना ठीक है किस को नहीं अगर हमने आप को पैग़म्बर बनाया तो इसमें अचम्भे की क्या बात है)**, और** (इसी तरह अगर हमने आप को दूसरों पर बड़ाई देदी तो अचम्भे की क्या बात है

क्योंकि) **हमने** (पहले भी) **कुछ पैग़म्बरों को कुछ पर बड़ाई दी** (है) **और** (इसी तरह अगर हमने आप को कुरआन दिया तो अचम्भे की क्या बात) **है** (क्योंकि आप से पहले) **हम दाऊद** (अ़लैहिस्सलाम) **को ज़बूर** (किताब) **दे चुके हैं**(55)।

नोटः- महशर के दिन काफ़िर भी अपनी क़ब्रों से हम्दो सना करते हुए (तस्बीह पढ़ते हुए) निकलेंगे मगर उस वक़्त का हम्दो सना करना उनको कोई नफ़ा नहीं देगा। (क़ुरतबी)

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَ لَا تَحْوِيْلًا ﴿٥٦﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
يَبْتَغُوْنَ اِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَ يَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ؕ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ
مَحْذُوْرًا ﴿٥٧﴾ وَ اِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى
الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٥٨﴾ وَ مَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَ اٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً
فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَ مَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿٥٩﴾ وَ اِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ وَ مَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِىْٓ
اَرَيْنٰكَ اِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَ الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِى الْقُرْاٰنِ ؕ وَ نُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿٦٠﴾

आयत न० 56 से 60

आप (उन लोगों से) **कह दीजिए कि जिन को तुम अल्लाह के सिवा** (माबूद) **मान रहे हो** (जैसे फ़रिशते और जिन्नात) **ज़रा उन को** (अपनी तकलीफ़ दूर करने के लिए) **पुकारो तो सही सो वो न तुम से तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं और न उसको बदल सकते हैं** (जैसे तकलीफ़ को बिल्कुल दूर न कर सकें कुछ हल्का ही कर दें)**(56) जिन को ये मुशरिक लोग** (अपनी ज़रूरत पूरी करने या मुसीबत दूर करने के लिए) **पुकार रहे हैं वो ख़ुद ही अपने रब की तरफ़** (पहुंचने का) **वास्ता तलाश कर रहे हैं कि उनमें कौन** (अल्लाह के) **ज़्यादा नज़दीक हो जाए** (यानी इसके लिए ज़्यादा इबादत करते हैं) **और वो उस की रहमत के ज़्यादा उम्मीदवार हैं और उसके अज़ाब से** (नाफ़रमानी की सूरत में) **डरते हैं, बेशक आप के रब का अज़ाब है भी डरने की चीज़** (यानी जब ख़ुद ही इबादत करते हैं तो माबूद कैसे हो सकते हैं और जब वो ख़ुद ही अपनी ज़रूरतों में और तकलीफ़ के दूर करने में अल्लाह तआ़ला के मोहताज हैं तो वो दूसरों की ज़रूरत पूरी और मुसीबत दूर क्या कर सकते हैं)**(57) और** (काफ़िरों की) **ऐसी कोई बस्ती नहीं जिसको हम क़ियामत से पहले**

(अज़ाब से) **हलाक न करें** (या क़ियामत के दिन) **उसके रहने वालों को** (दोज़ख़ का) **सख़्त अज़ाब न दें, यह बात** (तक़दीर की) **किताब में लिखी हुई है** (बस अगर कोई काफ़िर यहां हलाक होने से बच गया तो क़ियामत के दिन की बड़ी मुसीबत से न बचेगा)(58) **और हम को** (मांगे हुए ख़ास) **मोजिज़े भेजने से सिर्फ़ ये ही बात रोकती है कि पहले लोग इन** (जैसे मांगे हुए मोजिज़ों) **को झुटला चुके हैं** (तो ये भी ऐसे ही झुटलाएंगे), **और** (ऐसा ही एक क़िस्सा भी सुन लो कि) **हम ने समूद क़ौम को** (उन की मांग पर सालिह अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा बनाकर) **ऊंटनी दी थी** (जो कि अजीब तरह पैदा हुई थी और) **जो कि** (मोजिज़ा होने की वजह से) **आंखें खोलने को काफ़ी थी सो उन लोगों ने** (उससे सबक़ न लिया बल्कि) **उसके साथ ज़ुल्म किया** (कि उस को मार डाला अगर इन लोगों को मांगे मोजिज़े दिखाए गये तो ये भी ऐसा ही करेंगे), **और हम ऐसे मोजिज़ों को सिर्फ़** (इस बात से) **डराने के लिए भेजा करते** (हैं कि अगर यह मांगा मोजिज़ा देख कर भी ईमान न लाओगे तो उसी दम हलाक कर दिये जाओगे और अल्लाह तआला इनको अभी हलाक करना नहीं चाहते इसलिए इन के मांगे मोजिज़े नहीं दिखाऐ जाते) **हैं(59) और** (ऐ पैग़म्बर) **आप वो वक़्त याद कीजिए जब कि हमने आप से कहा था कि आप का रब** (अपने इल्म से) **सारे लोगों को घेरे हुए** (है और उन का ईमान न लाना भी अल्लाह तआला को पता) **है, और हमने** (मैराज की रात में) **जो कुछ** (जागते हुए) **आप को दिखाया था और जिस पेड़ की क़ुरआन में बुराई की गई है** (यानी ज़क़्क़ूम जो काफ़िरों का खाना है) **हमने उन दोनों चीज़ों को उन लोगों के लिए गुमराही का सामान कर दिया** (यानी इन लोगों ने मैराज को भी झुटलाया कि एक रात के थोड़े हिस्से में इतना लम्बा सफ़र और ज़क़्क़ूम का पेड़ दोज़ख़ में कैसे रह सकता है अगर हो भी तो जल जाएगा), **और हम इन लोगों को डराते रहते हैं लेकिन इनकी बड़ी सरकशी बढ़ती ही चली जाती है** (कि इनकार के साथ हंसी भी उड़ाते थे)(60)।

नोटः- कुछ नौ मुस्लिम लोग जो ईमान पर पूरी तरह नहीं जम पाए थे मैराज की बातें सुनकर उसको झुटला कर गुमराह हो गये दीन से फिर गये थे इसलिए इस बात को गुमराही का सामान बताया गया।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾ۚ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا
الَّذِيْ كَرَّمْتَ عَلَيَّ ؗ لَىِٕنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ

مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ۝٦٣ وَ اسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَ اَجْلِبْ عَلَيْهِمْ
بِخَيْلِكَ وَ رَجِلِكَ وَ شَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝٦٤ اِنَّ عِبَادِيْ
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ۝٦٥

आयत न० 61 से 65

और (वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि हमने फ़रिशतों से कहा कि आदम को सजदा करो तो उन सब ने सजदा किया मगर इबलीस ने** (नहीं किया, और) **कहा कि क्या मैं ऐसे आदमी को सजदा करूं जिसको आपने मिट्टी से बनाया है(61)** (इस पर मरदूद हो गया उस वक़्त) **कहने लगा इस आदमी को जो आपने मुझ पर बड़ाई दी है** (और इसीलिए उसको सजदा करने का मुझे हुक्म दिया है) **तो भला बताइये तो** (इसमें क्या बड़ाई है जिस की वजह से मैं मरदूद हुआ) **अगर आपने मुझको क़ियामत के ज़माने तक** (जीने की) **मुहलत दी तो मैं** (भी) **सिवाए कुछ लोगों के** (जो सच्चे होंगे बाक़ी) **उसकी सारी औलाद को अपने क़ाबू में कर लूंगा** (यानी गुमराह कर दूंगा)**(62) कहा** (अल्लाह ने) **जा** (जो तुझ से हो सके करले) **जो आदमी उनमें से तेरे साथ होलेगा तो तुम सब की सज़ा जहन्नम है पूरी सज़ा(63) और उनमें से जिस पर तेरा बस चले अपनी आवाज़ से उसे** (सीधे रास्ते से) **बहका देना और उन पर अपने सवार और पियादे चढ़ा लाना** (कि तेरी सारी फ़ौज मिलकर गुमराह करने में पूरा ज़ोर लगादे) **और माल और औलाद में उनके अपना साझा कर लेना** (यानी माल और औलाद को गुमराही का सामान बना देना) **और उनसे** (झूटे झूटे) **वादे करना** (कि क़ियामत में गुनाह पर पकड़ न होगी)**, और शैतान उन लोगों से बिल्कुल झूटे वादे करता है(64) यक़ीन रख मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा बस न चलेगा, और** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसका क़ाबू सच्चों पर कैसे चलेगा कि) **आप का रब** (उनकी) **रखवाली के लिए काफ़ी है(65)।**

नोटः- लोगों के माल में शैतान का साझा होने का मतलब यह है कि नाजाइज़ तरीक़ों से माल कमाया जाए या हराम कामों में ख़र्च किया जाए और औलाद में साझा होने का मतलब यह है कि हराम हो या उन की परवरिश हराम आमदनी से करे। (क़ुरतबी)

رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا ۝٦٦ وَ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي

الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ﴿٦٧﴾ اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ
يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا ﴿٦٨﴾ ۙ اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ
تَارَةً اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ﴿٦٩﴾ وَ
لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا
تَفْضِيْلًا ﴿٧٠﴾ ع يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ ۚ فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰٓئِكَ يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَ لَا
يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ﴿٧١﴾ وَ مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى وَ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٧٢﴾

आयत न० 66 से 72

तुम्हारा रब ऐसा (नेमतें देने वाला) **है कि तुम्हारे** (नफ़े के) **लिए कशती को दरिया में ले चलता है ताकि तुम उसके वास्ते से रोज़ी तलाश करो, बेशक वो तुम्हारे हाल पर बड़ा महरबान है(66) और जब तुम को दरिया में कोई तकलीफ़ पहुंचती है** (जैसे तूफ़ान में डूबने का ख़तरा) **तो सिवाए अल्लाह के और जिस-जिस की तुम इबादत करते थे सब ग़ाइब हो जाते हैं** (कि उन का न ध्यान आता है न उनको पुकारते हो और पुकारो भी तो उनसे किसी मदद की उम्मीद नहीं) **फिर जब तुम को सूखे** (यानी ज़मीन) **की तरफ़ बचा लाता है तो फिर उससे मुंह फेर लेते हो, और इन्सान बड़ा नाशुक्रा** (है कि इतनी जल्दी अल्लाह की महरबानी और अपनी फ़रियाद को भूल जाता) **है(67) तो क्या** (ज़मीन पर पहुंच कर) **तुम इस बात से बेफ़िक्र हो बैठे हो कि तुम को सूखे में लाकर ही ज़मीन में धंसा दे** (मतलब ये है कि अल्लाह के नज़दीक दरिया और सूखे में कोई फ़र्क़ नहीं वो जैसे दरिया में डुबा सकता है ऐसे ही सूखे में भी ज़मीन में धंसा सकता है) **या तुम पर कोई पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे** (जैसा कि क़ौमे आ़द ऐसे ही हवा के तूफ़ान से हलाक की गई थी) **फिर तुम्हें** (अल्लाह के सिवा) **कोई अपना रखवाला न मिले(68) या तुम इससे बेफ़िक्र हो गये कि अल्लाह तआ़ला फिर तुम को दरिया ही में दोबारा ले जाए फिर तुम पर हवा का तूफ़ान भेज दे फिर तुम को तुम्हारे कुफ़्र की वजह से डुबो दे फिर इस बात पर** (यानी डुबोने पर) **कोई हमारा पीछा करने वाला भी तुम को न मिले** (जो हमसे तुम्हारा बदला ले सके)(69) **और हमने आदम की औलाद को** (ख़ास ख़ूबियां देकर) **इज़्ज़त दी और हमने उन को सूखे और दरिया में** (जानवरों और कशतियों पर) **सवार किया और पाकीज़ा रोज़ी दी और हमने**

उनको अपनी पैदा की हुई बहुत सी चीज़ों पर बड़ाई दी है(70) (और उस दिन को याद करना चाहिए) **जिस दिन हम सभी इन्सानों को उनके आमाल नामे के साथ** (हश्र के मैदान में) **बुलाएंगे,** (और वो आमाल नामे उड़ा दिये जाएंगे तो किसी के दाहिने हाथ और किसी के बाएं हाथ में आजाएंगे) **फिर जिस का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा** (और ये ईमान वाले होंगे) **तो ऐसे लोग अपना आमाल नामा** (ख़ुश होकर) **पढ़ेंगे और उनका ज़रा नुक़सान न किया जाएगा** (यानी उनके ईमान और नेक कामों का सवाब पूरा-पूरा मिलेगा ज़रा कम न होगा चाहे ज़्यादा मिल जाए और अज़ाब से छुटकारा भी मिलेगा चाहे पहले ही या गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद)(71) **और जो आदमी दुनिया में** (सच्चाई की राह देखने से) **अन्धा रहा तो वो आख़रत में भी** (अच्छे ठिकाने तक पहुंचने से) **अन्धा रहेगा और** (बल्कि वहां दुनिया से भी ज़्यादा) **रास्ते से भटका हुआ रहेगा** (क्योंकि दुनिया में तो गुमराही का इलाज हो सकता था वहां ये भी न हो सकेगा ये वो लोग होंगे जिन का आमाल नामा उनके बाएं हाथ में दिया जाएगा)(72)।

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ۖ وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝٧٣ وَلَوْلَآ اَنْ
ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـًٔا قَلِيْلًا ۝٧٤ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ
عَلَيْنَا نَصِيْرًا ۝٧٥ وَاِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْاَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَاِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلٰفَكَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝٧٦
سُنَّةَ مَنْ قَدْ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝٧٧

आयत न० 73 से 77

और (ऐ पैग़म्बर) **ये काफ़िर लोग** (अपनी चालों से) **आप को उस चीज़ से बिचलाने** (और हटाने) **ही लगे थे जो हमने आप पर वही से भेजी है** (यानी इस कोशिश में लगे थे कि आप से अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ काम करादें और) **ताकि आप उस** (अल्लाह के हुक्म) **के सिवा हमारी तरफ़ से कोई और बात बना दें** (क्योंकि पैग़म्बर का काम शरीअत के ख़िलाफ़ होता नहीं इसलिए अगर नऊज़ुबिल्लाह आप से कोई काम शरीअत के ख़िलाफ़ हो जाता तो यह ज़रूरी था कि वो काम अल्लाह की तरफ़ से है) **और ऐसी हालत में आप को अपना गहरा दोस्त बना लेते**(73) **और** (उनकी यह चाल ऐसी थी कि) **अगर हमने आप का पांव जमाए न रक्खा होता** (यानी मासूम न बनाया होता) **तो आप उन की तरफ़ कुछ कुछ झुकने लगते**(74) (और) **अगर ऐसा हो जाता**

(कि आप का कुछ झुकाव उनकी बात की तरफ़ होता) **तो हम आप को** (इस वजह से कि आप का रूतबा बहुत ऊंचा है) **ज़िन्दगी में भी और मौत के बाद भी दूनी सज़ा देते फिर आप हमारे मुक़ाबिले में कोई मददगार भी न पाते** (मगर चूंकि हमने आप को मासूम बनाया है इसलिए उनकी तरफ़ ज़रा भी झुकाव नहीं हुआ और उस सज़ा से बच गये)(75) **और ये** (काफ़िर) **लोग इस ज़मीन** (मक्का या मदीना) **से आप के पैर ही उखाड़ने लगे थे ताकि आप को इससे निकाल दें और अगर ऐसा हो जाता तो आप के बाद ये भी बहुत कम** (यहां) **ठहरने पाते**(76) **जैसा उन पैग़म्बरों के बारे में** (हमारा) **तरीक़ा रहा है जिनको आप से पहले पैग़म्बर बनाकर भेजा था** (कि जब उन की क़ौम ने उनको वतन से निकाला तो फिर उस क़ौम को भी यहां रहना नसीब नहीं हुआ) **और आप हमारे तरीक़े में कोई बदलाव नहीं पाएंगे**(77)।

नोटः- मक्के के कुछ सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा कि अगर आप सचमुच हमारी तरफ़ भेजे गये हैं तो फिर अपनी मजलिस से उन ग़रीब लोगों को हटा दीजिए जिनके साथ बैठना हमारे लिए तोहीन है तो फिर हम भी आप के साथी और दोस्त हो जाएंगे उनकी इस बात पर हुज़ूर ने ज़रा सोचा कि उन की बात पूरी कर दी जाए तो शायद ये मुसलमान हो जाएं जिस पर ये आयत उतारी। इस आयत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़बरदार किया गया कि उनकी बात एक चाल है और उनकी दोस्ती फ़ितना है आप को उन की बात नहीं माननी चाहिए इस तरह अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बर मासूम का ग़लत बात की तरफ़ झुकाव होने से भी बचा लिया।

اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ﴿۷۸﴾ وَ مِنَ الَّيْلِ
فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ﴿۷۹﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ
اَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّ اجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿۸۰﴾ وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ
الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿۸۱﴾ وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَ لَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا
خَسَارًا ﴿۸۲﴾

आयत न० 78 से 82

सूरज ढलने के बाद से रात के अन्धेरे तक नमाज़ें अदा किया कीजिए (इसमें ज़ुहर, अस्र मग़रिब व इशा चार नमाज़ें आ गईं जैसा कि हदीस में है) **और फ़ज्र** (यानी सुबह) **की नमाज़ भी** (अदा करें), **बेशक सुबह की नमाज़** (फ़रिशतों के) **हाज़िर होने का वक़्त** (है सुबह का वक़्त चूंकि नींद से जागने का वक़्त है जिसमें सुस्ती का ख़तरा था इसलिए उसको अलग से बयान किया गया दूसरे इस वक़्त में रात वाले फ़रिशतों की डयूटी बदलती है तो दिन के फ़रिशते भी आजाते हैं दोनों के जमा होने से यह वक़्त ज़्यादा बरकत का) **है**(78) **और कुछ रात के हिस्से में भी** (नमाज़ अदा करें) **यानी उसमें तहज्जुद पढ़ा करें जो कि आप के लिए** (पांचों नमाज़ों के सिवा) **एक ज़्यादा चीज़ है, उम्मीद** (यानी वादा) **है कि आप का रब आप को मक़ामे महमूद में जगह देगा** (मक़ामे महमूद सिफ़ारिश का सब से बड़ा दर्जा है जो महशर में सारे इन्सानों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिया जाएगा)(79) **और आप यह दुआ कीजिए कि या रब मेरे** (मक्का से जाने के बाद) **मुझ को** (जहां ले जाना हो) **भलाई** (यानी आराम) **के साथ पहुंचाएगा और** (जब मक्का से ले जाना हो तो) **मुझ को भलाई** (यानी आराम) **के साथ ले जाइयेगा और मुझ को अपने पास से** (इन काफ़िरों पर) **ऐसा दबदबा दीजिएगा जिसके साथ** (आपकी) **मदद हो** (वर्ना कभी-कभी तो काफ़िरों की जीत भी हो जाती है मगर उसके साथ अल्लाह की मदद नहीं होती इसलिए टिकाऊ नहीं होती)(80) **और कह दीजिए कि** (बस अब) **हक़** (यानी सच्चा दीन हावी होने को) **आया और झूट मिट गया,** (और) **बेशक झूट तो मिटने वाली चीज़ है** (हिजरत के बाद मक्का जीता गया तो ये सब वादे पूरे हो गये)(81) **और हम ऐसी चीज़ यानी कुरआन उतारते हैं कि वो ईमान वालों के लिए तो शिफ़ा और रहमत है** (क्योंकि वो उसको मानते और उस पर अमल करते हैं जिस से उन पर रहमत होती है और झूटे अक़ीदों और बुरी सोच से शिफ़ा होती है) **और ज़ालिमों को इससे और उल्टा नुक़सान बढ़ता है** (कि जब वो उसको नहीं मानते तो अल्लाह तआ़ला के अज़ाब के हक़दार हो जाते हैं)(82)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी सिफ़ारिश मेरी उम्मत के उन लोगों के लिए होगी जिन्होंने बड़े गुनाह किये थे। इससे मालूम हुआ कि नेक लोगों की सिफ़ारिश छोटे गुनाह वालों के लिए होगी।

(मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهٖ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۗ
فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدٰى سَبِيلًا ﴿٨٤﴾ وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۗ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ
إِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾ وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ﴿٨٦﴾ إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ
رَّبِّكَ ۗ إِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا ﴿٨٧﴾ قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى أَنْ يَّأْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا
يَأْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿٨٨﴾ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۫
فَأَبٰىٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا ﴿٨٩﴾

आयत न० 83 से 89

और जब हम इन्सान को (कोई) **नेमत देते हैं तो** (काफ़िर इन्सान हम से और हमारे हुक्मों से) **मुंह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है, और जब उस को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो** (बिल्कुल रहमत से) **नाउम्मीद हो जाता** (है और ये दोनो हालतें सबूत हैं अल्लाह तआ़ला से ताल्लुक़ न होने की और वो ही हर कुफ़्र व गुमराही की बुनियाद) **है(83) आप कह दीजिए कि** (मोमिन व काफ़िर और अच्छा व बुरा) **हर आदमी अपने तरीक़े पर काम कर रहा है, तो आप का रब अच्छी तरह जानता है उस को जो ज़्यादा ठीक** (और सही) **रास्ते पर हो** (इसी तरह जो सही रास्ते पर न हो उसको भी जानता है और हर एक को उसके काम के हिसाब से बदला या सज़ा देगा यह नहीं कि जिस का दिल चाहे बिना किसी दलील के अपने को ठीक रास्ते पर समझने लगे)(84) **और ये लोग आप से** (इम्तिहान के लिए) **रूह** (की असलीयत) **के बारे में पूछते हैं, आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि रूह** (के बारे में बस इतना समझ लो कि वो एक चीज़ है जो) **मेरे रब के हुक्म से बनी है और** (बाक़ी उसकी पूरी असलीयत तो) **तुम को बहुत थोड़ा इल्म** (तुम्हारी समझ और ज़रूरत के हिसाब से) **दिया गया** (है और रूह की असलीयत का जानना कोई ज़रूरत की चीज़ नहीं और न उस की असलीयत आम लोगों की समझ में आ सकती है इसलिए क़ुरआन उसकी असलीयत को बयान नहीं करता) **है(85) और अगर हम चाहें तो जितनी हमने आप पर वही भेजी है** (और उसके वास्ते से आप को इल्म दिया है) **सब वापस लेलें फिर उस** (वही) **के** (वापस लाने के लिए) **आप को हमारे मुक़ाबिले में कोई मददगार भी न मिलेगा(86) मगर** (यह) **आप के रब ही की रहमत है** (कि ऐसा नहीं किया), **बेशक आप पर उसकी बड़ी महरबानी** (है मतलब

यह है कि इन्सान को रूह जैसी चीज़ की असलीयत का तो क्या इल्म होता उस को जो थोड़ा सा इल्म वही से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दिया गया है वो भी उस की जागीर नहीं अल्लाह तआ़ला चाहे तो देने के बाद भी वापस ले सकता है मगर वो अपनी रहमत से ऐसा नहीं करता वजह यह है कि आप पर अल्लाह तआ़ला की बड़ी महरबानी) **है(87) आप कह दीजिए कि** (मेरी पैग़म्बरी की दलील के लिए वो कुरआन का मोजिजा ही काफ़ी है कि) **अगर सभी इन्सान और जिन्नात सब इस बात के लिए जमा हो जाएं कि ऐसा क़ुरआन बना लाएं तब भी वो ऐसा न कर सकेंगे चाहे एक दूसरे के मददगार भी बन जाएं** (यानी उनमें से हर एक अलग-अलग कोशिश करके तो क्या कामयाब होता सब के सब एक दूसरे की मदद से काम करके भी कुरआन जैसा नहीं बना सकते)(88) **और हमने लोगों के** (समझाने के) **लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की अच्छी-अच्छी बातें तरह-तरह से बयान की हैं, फिर भी बहुत से लोग इनकार ही करते रहे**(89)

नोटः- यहूदियों ने रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आज़माने के लिए 'रूह' के बारे में सवाल किया था आपने फ़ौरन जवाब नहीं दिया बल्कि वही आने का इन्तिज़ार किया जिस पर ये आयत उतरी।

وَ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ﴿٩٠﴾ اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ عِنَبٍ فَتُفَجِّرَ
الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٩١﴾ اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ﴿٩٢﴾ اَوْ
يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَآءِ ؕ وَ لَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ؕ قُلْ
سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٣﴾ وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا
اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ﴿٩٤﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا
رَّسُوْلًا ﴿٩٥﴾

आयत न० 90 से 95

और ये लोग (इसके बावजूद कि कुरआनी मुजिज़े से आप की पैग़म्बरी का काफ़ी और साफ़ सबूत इनको मिल चुका है फिर भी हटधर्मी की वजह से ईमान नहीं लाते और ये बहाने करते हैं कि) **कहते हैं कि हम आप पर कभी भी ईमान न लाएंगे जब तक आप हमारे लिए** (मक्के की) **ज़मीन से** (पानी का) **चश्मा** (यानी सोत) **जारी न कर दें(90) या ख़ास आप के लिए खजूर**

और अंगूर का कोई बाग़ न हो फिर उस बाग़ के बीच बीच में जगह-जगह बहुत सी नहरें आप जारी कर दें(91) या जैसा (कुफ़्र पर अज़ाब के बारे में) **आप कहा करते हैं** (तो) **आप आसमान के टुकड़े हम पर न गिरा दें या आप अल्लाह को और फ़रिशतों को** (हमारे) **सामने न ले आओ** (कि हम खुल्लम खुल्ला देखलें)**(92) या आप के पास कोई सोने का बना हुआ घर न हो या आप आसमान पर** (हमारे सामने) **न चढ़ जाएं, और हम तो आप के** (आसमान पर) **चढ़ने का कभी भी यक़ीन न करेंगे जब तक कि** (वहां से) **आप हमारे पास एक किताब न लाएं जिस को हम भी पढ़ लें** (और उसमें आप के आसमान पर पहुंचने की तस्दीक़ की रसीद लिखी हुई हो)**, आप** (इन सब बेतुकी बातों के जवाब में) **कह दीजिए सुबहानल्लाह मैं सिवाए इसके कि आदमी हूं** (मगर) **पैग़म्बर हूं और क्या हूं** (कि इन मांगो को पूरा करना मेरे बस में हो और न यह किसी पैग़म्बर के बस में है यह तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की क़ुदरत में है वो चाहें और ठीक समझें तो मांगे मोजिज़ों को पूरा कर सकते हैं)**(93) और जिस वक़्त उन लोगों के पास हिदायत** (यानी पैग़म्बरी की सही दलील क़ुरआनी मोजिज़े की सूरत में) **पहुंच चुकी उस वक़्त ईमान लाने से सिवाए इसके और कोई बात रोकने वाली न हुई कि उन्होंने** (इन्सान को पैग़म्बरी के क़ाबिल नहीं समझा इसलिए) **कहा क्या अल्लाह तआला ने इन्सान को पैग़म्बर बनाकर भेजा है** (यानी ऐसा नहीं हो सकता)**(94) आप** (जवाब में हमारी तरफ़ से) **कह दीजिए कि अगर ज़मीन पर फ़रिशते** (रहते) **होते कि उस पर चलते बसते तो हम ज़रूर उन पर आसमान से फ़रिशते को पैग़म्बर बना कर भेजते(95)।**

नोटः- इन्सानों की तरफ़ इन्सान को ही अल्लाह का पैग़म्बर बनाया जा सकता है और पैग़म्बर शरीअत के हुक्मों की पाबन्दी का नमूना भी होते हैं इसलिए भी इन्सान का पैग़म्बर होना ज़रूरी है।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِىْ وَ بَيْنَكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ﴿۹۶﴾ وَ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَ مَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ نَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّ بُكْمًا وَّ صُمًّا ؕ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿۹۷﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَّ رُفَاتًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ﴿۹۸﴾ اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى
اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَ جَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَاَبَى الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ

رَحۡمَةِ رَبِّیۡۤ اِذًا لَّاَمۡسَکۡتُمۡ خَشۡیَةَ الۡاِنۡفَاقِ ؕ وَ کَانَ الۡاِنۡسَانُ قَتُوۡرًا ﴿۱۰۰﴾

आयत न० 96 से 100

(जब ये लोग पैग़म्बरी के साफ़ सबूत आजाने और सभी शक दूर हो जाने के बाद भी नहीं मानते तो) **आप** (आख़री बात यह) **कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला मेरे तुम्हारे बीच** (के झगड़े में) **गवाह** (बनने के लिए) **काफ़ी** (है यानी मैं अल्लाह का रसूल हूं इस बात को अल्लाह तआ़ला जानता) **है,** (क्योंकि) **वो अपने बन्दों** (के हाल) **को अच्छी तरह जानता अच्छी तरह देखता** (है तुम्हारी हटधर्मी को भी देखता) **है(96) और अल्लाह जिसको राह पर लाए वो राह पर आता है और जिसको बेराह कर दे तो अल्लाह के सिवा आप किसी को भी ऐसों का मददगार न पाएंगे** (और कुफ़्र की वजह से इनको अल्लाह की मदद हो नहीं सकती मतलब यह कि जब तक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद न हो न हिदायत हो सकती है न अज़ाब से छुटकारा), **और हम क़ियामत के दिन उन को अन्धा गूंगा बहरा करके मुंह के बल चलाएंगे, उनका ठिकाना दोज़ख़ है,** (जिस की यह हालत होगी कि) **वो** (यानी दोज़ख़ की आग) **जब ज़रा धीमी होने लगेगी उसी वक़्त हम उन के लिए और ज़्यादा भड़का देंगे(97) यह है उन की सज़ा इस वजह से कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया था और यह कहा था कि क्या हम हड्डियां और** (वो भी) **बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएंगे तो क्या हम फिर से पैदा करके** (क़ब्रों से) **उठाए जाएंगे(98) क्या उन लोगों को इतना पता नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमान और ज़मीन पैदा किये वो इस बात की** (भी) **ताक़त रखता है कि वो इन जैसे आदमी दोबारा पैदा कर दे और** (इनकार करने वालों को शायद यह शक हो कि इतने मर गये अब तक तो यह दोबारा ज़िन्दा होकर उठने का वादा पूरा हुआ नहीं तो इसकी वजह यह है कि) **उनके** (दोबारा पैदा करने के) **लिए एक वक़्त तय है कि उस** (तय) **वक़्त** (के आने) **में ज़रा शक नहीं, इस पर भी ज़ालिम लोग इनकार ही करते रहे(99) आप कह दीजिए कि अगर तुम लोग मेरे रब की रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **के ख़ज़ानों** (यानी ख़ूबियों) **के मालिक होते** (कि जिस को चाहते देते जिस को चाहते न देते) **तो इस सूरत में तुम** (उसके) **ख़र्च हो जाने के डर से ज़रूर हाथ रोक लेते** (कभी किसी को न देते जब कि यह चीज़ किसी को देने से घटती भी नहीं), **और आदमी है बड़ा तंग दिल** (यानी कन्जूस कि न घटने वाली चीज़ को भी देने से जी चुराता है जिस की वजह पैग़म्बरों से दुशमनी और कंजूसी के सिवा

शायद यह भी हो कि अगर किसी को पैग़म्बर बना लिया तो फिर उसके हुक्मों की पाबन्दी करना पड़ेगी)(100)।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فَاسْأَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا مُوسَىٰ
مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَنْزَلَ هَٰؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ بَصَائِرَ ج وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يَا فِرْعَوْنُ
مَثْبُورًا ﴿١٠٢﴾ فَأَرَادَ أَنْ يَسْتَفِزَّهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ﴿١٠٣﴾ وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهِ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ
اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ﴿١٠٤﴾ وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ط وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا
مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿١٠٥﴾ وَقُرْآنًا فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ﴿١٠٦﴾ قُلْ آمِنُوا بِهِ أَوْ لَا تُؤْمِنُوا ط
إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهِ إِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ يَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ سُجَّدًا ﴿١٠٧﴾ وَيَقُولُونَ سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنْ كَانَ
وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُولًا ﴿١٠٨﴾ وَيَخِرُّونَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۩ ﴿١٠٩﴾

आयत न० 101 से 109

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को खुले हुए नौ मोजिज़े दिये** (जिन का ज़िक्र पारा न०1 में है) **सो आप बनी इस्राईल से** (भी चाहे) **पूछ लीजिए जब कि वो उनके पास आए थे** (मूसा अलैहिस्सलाम ने ईमान लाने के लिए इन निशानियों से डराया) **तो फ़िरऔन ने उन से कहा कि ऐ मूसा मैं समझता हूं ज़रूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है** (जिससे तुम्हारी समझ जाती रही कि ऐसी बहकी-बहकी बातें करते हो)**(101) मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा तुम** (दिल में) **अच्छी तरह जानते हो** (चाहे शर्म की वजह से ज़बान से हामी नहीं भरते) **कि ये निशानियों ख़ास आसमान और ज़मीन के रब ही ने भेजी है जो कि सबक़ लेने के लिए** (काफ़ी) **सामान हैं और मेरी समझ से ऐ फ़िरऔन ज़रूर तुम्हारी बर्बादी के दिन आ गये हैं(102)** (और या तो फ़िरऔन बनी इसराईल को मिस्र से जाने की इजाज़त न देता था और) **फिर** (यह हुआ कि) **उसने** (इस डर से कि कहीं बनी इसराईल मूसा अलैहिस्सलाम के असर से ज़ोर न पकड़ जाएं खुद ही) **चाहा कि बनी इसराईल का इस ज़मीन से पैर ही उखाड़ दे** (यानी उन को मुल्क से निकाल दे) **सो हमने** (इससे पहले कि वो कामयाब हो) **उस** (ही) **को और जो उसके साथ थे सब को डुबो दिया(103) और उस** (के डुबोने) **के बाद हमने बनी इसराईल को कह दिया कि** (अब) **तुम इस ज़मीन** (के

मालिक हो तुम ही इस) **में रहो सहो** (मगर ज़िन्दगी तक इसके मालिक हो) **फिर जब आख़िरत का वादा आजाएगा तो हम सब को जमा करके** (क़ियामत के मैदान में) **लाकर हाज़िर करेंगे**(104) **और** (जिस तरह हमने मूसा अलैहिस्सलाम को मोजिज़े दिये थे इसी तरह आप को भी बहुत से मोजिज़े दिये जिनमें एक बड़ी शान वाला मोजिज़ा क़ुरआन है कि) **हमने क़ुरआन को हक़ के साथ उतारा और हक़ ही के साथ** (आप पर) **उतरा** (यानी बीच में कोई बदलाव नहीं हुआ इसलिए इस की हर बात हक़ है), **और** (जिस तरह हमने मूसा अलैहिस्सलाम को पैग़म्बर बनाया था और हिदायत उनके बस में न थी इसी तरह) **हमने आप को** (भी) **सिर्फ़** (ईमान पर सवाब की) **ख़ुशी सुनाने वाला और** (कुफ़्र पर अज़ाब से) **डराने वाला बनाकर भेजा है** (अगर कोई ईमान न लाए कुछ ग़म न कीजिए)(105) **और क़ुरआन में हमने** (आयतों का) **जगह-जगह फ़ासला रक्खा ताकि आप उसको लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ें** (जिससे वो अच्छी तरह समझ सकें) **और** (दूसरे यह कि) **हमने उस को उतारने में भी थोड़ा-थोड़ा करके उतारा** (है जिससे मतलब समझना आसान हो जाता) **है**(106) (आप साफ़) **कह दीजिए कि तुम इस क़ुरआन पर चाहे ईमान लाओ या ईमान न लाओ** (मुझ को कोई परवा नहीं दो वजह से एक तो यह कि मेरा क्या नुक़सान दूसरे यह कि तुम ईमान न लाए तो क्या हुआ दूसरे लोग ईमान ले आए, जैसा कि) **जिन लोगों को क़ुरआन** (के उतरने) **से पहले** (दीन का) **इल्म दिया गया था** (यानी किताब वालों के इन्साफ़ पसन्द आलिम) **यह क़ुरआन जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोडियों के बल सजदे में गिर जाते हैं**(107) **और कहते हैं हमारा रब** (वादा ख़िलाफ़ी से) **पाक है बेशक हमारे रब का वादा ज़रूर पूरा ही होता है** (सो जिस किताब का जिस पैग़म्बर पर उतारने का वादा पिछली किताबों में किया था उस को पूरा किया)(108) **और ठोड़ियों के बल** (जो) **गिरते हैं** (तो) **रोते हुए** (गिरते हैं) **और यह क़ुरआन** (यानी उस का सुनना) **उनके** (के दिलों) **की आजिज़ी** (और अल्लाह से डर) **को और बढ़ा देता है**(109)।

नोटः- एक हदीस में है कि "वो आदमी जहन्नम में न जाएगा जो अल्लाह के डर से रोया जब तक कि (थनों से) निकला हुआ दूध दोबारा थनों में वापस न लौट जाए" यानी जैसे यह नहीं हो सकता कि थनों से निकला हुआ दूध फिर थनों में वापस डाल दिया जाए इसी तरह यह भी नहीं हो सकता कि अल्लाह के डर से रोने वाला जहन्नम में चला जाए। (बैहक़ी)

तफ़सीर मज़हरी में है कि क़ुरआन की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है।

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَ
ابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝١١٠ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ۝١١١

आयत न० 110 से 111

आप कह दीजिए कि चाहे अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान कह कर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारोगे (तो अच्छा है क्योंकि) **उसके बहुत अच्छे-अच्छे नाम हैं** (और इस का शिर्क से कोई वास्ता नहीं क्योंकि एक ही हस्ती के बहुत से नाम होने से उसकी तौहीद में कोई फ़र्क़ नहीं आता)**, और अपनी जहरी नमाज़** (यानी जिस नमाज़ में ज़ोर की आवाज़ में कुरआन पढ़ा जाता है उस) **में न तो बहुत पुकार कर पढ़िए** (कि मुशरिक लोग सुनें और उल्टी सीधीं बातें कहें और नमाज़ में ध्यान बटे) **और न बिल्कुल ही धीमी आवाज़ में पढ़िए** (कि पीछे पढ़ने वाले नमाज़ियों को भी सुनाई न दे) **और दोनों के बीच एक** (औसत) **तरीक़ा अपनाएं(110) और** (ऐलानिया) **कह दीजिए कि सारी तारीफ़ें उसी अल्लाह के लिए** (ख़ास) **हैं जो न औलाद रखता है न हुकूमत में उस का कोई साझी है और न कमज़ोरी की वजह से कोई उसका मददगार है और उसकी ख़ूब बड़ाइयां बयान कीजिए(111)।**

नोटः- मुशरिकों ने यह ऐतराज़ किया था कि अल्लाह जब एक है तो अल्लाह और रहमान दो नामों से क्यों पुकारते हो क्या यह शिर्क नहीं तो इस पर यह आयत उतरी कि ये सब नाम अल्लाह ही के नाम हैं।

18-सूरत-कहफ़

इस मक्की सूरत में '12' रूकू और '110' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَ لَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ۜ﴿۱﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَ
يُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ﴿۲﴾ مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ﴿۳﴾ وَّ يُنْذِرَ الَّذِيْنَ
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ﴿۴﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّ لَا لِاٰبَآئِهِمْ ؕ كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ؕ اِنْ
يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿۵﴾ فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ﴿۶﴾ اِنَّا جَعَلْنَا
مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَ اِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ﴿۸﴾

आयत न० 01 से 08

सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए (साबित) **हैं जिसने अपने** (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर यह किताब उतारी और इस** (किताब) **में** (किसी क़िस्म की) **कोई कमी नहीं** (रक्खी न लफ़्ज़ों में कमी रक्खी न माइने के ऐतबार से कमी) **रक्खी(01)** (बल्कि इस को) **बिल्कुल ठीक बनाया** (और उतारा इसलिए) **ताकि वो** (किताब काफ़िरों को) **एक सख़्त अज़ाब से डराए जो अल्लाह की तरफ़ से** (उनको आख़रत में) **होगा और ईमान वालों को जो नेक काम करते हैं यह ख़ुशख़बरी दे कि उन को** (आख़रत में) **अच्छा बदला मिलेगा(02) जिसमें वो सदा रहेंगे(03) और ताकि** (काफ़िरों में से ख़ास कर) **उन लोगों को** (अज़ाब से) **डराए जो यह कहते हैं कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **अल्लाह तआला औलाद रखता है(04) न तो इसकी कोई दलील उन के पास है और न उनके बाप दादों के पास थी, बड़ी भारी बात है जो उन के मुंह से निकलती है,** (और) **वो लोग बिल्कुल ही झूट बोल रहे हैं(05)** (और आप जो उन लोगों के कुफ़्र व इनकार पर इतना ग़म करते हैं कि) **शायद आप उनके पीछे अगर ये लोग इस** (कुरआन) **पर ईमान न लाए तो ग़म से अपनी जान दे देंगे** (यानी इतना ग़म न कीजिए क्योंकि यह दुनिया तो एक इम्तिहान की

जगह है)(06) **यक़ीन जानो हमने ज़मीन पर की चीज़ों को इस** (ज़मीन) **के लिए सजावट का सामान बनाया ताकि हम** (इससे) **लोगों को आज़माएं कि उनमें से कौन ज़्यादा अच्छे काम करता** (है यह आज़माना है कि कौन इस दुनिया की सजावट और रौनक़ का दीवाना होकर अल्लाह और आख़रत को भूलता है और कौन नहीं सो कोई ईमान लाएगा और कोई नहीं इसलिए इतना ग़म करना बेकार) **है(07) और** (एक दिन ऐसा भी आएगा कि) **हम ज़मीन पर की सारी चीज़ों को एक साफ़ मैदान कर देंगे** (न उस पर कोई बसने वाला रहेगा न कोई पेड़ और पहाड़ और न कोई मकान बस आप अपना काम तबलीग़ का करते रहिए इनकार करने वालों के बुरे अन्जाम का इतना ग़म न कीजिए)(08)।

हदीसः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जो आदमी सूरत कहफ़ की पहली और आख़री आयतें पढ़ ले उसके लिए उसके पांव से सर तक एक नूर हो जाता है। और जो पूरी सूरत पढ़ले तो उस के लिए ज़मीन से आसमान तक नूर हो जाता है।

(मसनद अहमद)

और एक रिवायत में है कि दज्जाल के फ़ितने से बचा रहेगा।

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَ الرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝٩ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ
اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝١٠ فَضَرَبْنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۝١١
ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ۝١٢ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ
فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَ زِدْنٰهُمْ هُدًى ۝١٣ وَّ رَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَنْ
نَّدْعُوَاۡ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ اِذًا شَطَطًا ۝١٤ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ لَوْ لَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ
بِسُلْطٰنٍۭ بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۝١٥ وَ اِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ فَاْوٗۤا اِلَى
الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ۝١٦

आयत न० 09 से 16

नोटः- कुछ लोगों ने असहाबे कहफ़ के बारे में सवाल किया था आगे आयतों में उन्हीं के क़िस्से का बयान है।

क्या आप यह सोचते हैं कि ग़ार (यानी गुफ़ा) **वाले और पहाड़ वाले** (ये दोनो एक ही गिरोह के नाम हैं) **हमारी** (क़ुदरत की) **निशानियों में से कुछ अचम्भे की चीज़** (थे क्योंकि सवाल करने वाले इस क़िस्से को अचम्भे की चीज़ समझ रहे) **थे(09)** (यह उस वक़्त का ज़िक्र है) **जब कि उन नौजवानों ने** (एक बेदीन बादशाह की पकड़ से भाग कर) **उस ग़ार में जाकर पनाह ली** (जिस का क़िस्सा आगे आता है) **फिर** (अल्लाह तआ़ला से इस तरह दुआ मांगी कि) **कहा कि या रब हमारे हम को अपने पास से रहमत का सामान दीजिए और हमारे** (इस) **काम में हमारे लिए भलाई का सामान कर दीजिए(10) हम ने** (उनकी दुआ क़ुबूल करके उनकी परीशानियां दूर करने की यह सूरत की थी) **उस ग़ार में उन के कानों पर बहुत सालों तक नींद का पर्दा डाल दिया** (कि किसी शोर से उन की आंख न खुल सके)(11) **फिर हमने उन को** (नींद से) **उठाया ताकि हम** (खुले तौर पर भी) **देखें कि** (उस गुफ़ा में रहने के दिनों में बहस करने वालों में से) **कौन सा गिरोह उनके रहने के दिनों से ज़्यादा जानकार** (था, नींद से जागने के बाद उनमें एक गिरोह का कहना तो यह था कि हम पूरा दिन या कुछ हिस्सा एक दिन का सोये हैं, दूसरे गिरोह ने कहा कि अल्लाह ही जानता है कि तुम कितने दिन सोते रहे, आयत में इसी तरफ़ इशारा है कि यह दूसरा गिरोह सही था जिसने दिनों की गिनती को अल्लाह पर छोड़ दिया क्योंकि इसका कोई सबूत नहीं) **था(12) हम उन का क़िस्सा आप से ठीक-ठीक बयान करते हैं** (इसमें इशारा कर दिया कि इस के ख़िलाफ़ जो कुछ दुनिया में मशहूर है वो ठीक नहीं)**, वो लोग** (असहाबे कहफ़) **कुछ नौजवान थे जो** (उस ज़माने के दीन के हिसाब से) **अपने रब पर ईमान लाए थे और हमने उन की हिदायत में और तरक़्क़ी कर दी** (कि दीन पर मज़बूती से जमे रहे)(13) **और हम ने उन के दिल मज़बूत कर दिये जब कि वो हिम्मत के साथ** (आपस में या मुख़ालिफ़ बादशाह के सामने) **कहने लगे कि हमारा रब तो वो है जो आसमानों और ज़मीन का रब है हम तो उस को छोड़ कर किसी माबूद की इबादत न करेंगे** (क्योंकि अगर खुदा न करे हमने ऐसा किया) **तो उस सूरत में हमने ज़रूर बड़ी बेजा बात कही(14)** (और) **यह जो हमारी क़ौम है उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर और माबूद बना रक्खे हैं** (क्योंकि उनकी क़ौम और बादशाह सब बुत परस्त थे)**, ये लोग अपने माबूदों** (के माबूद होने) **पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते** (जैसा कि तौहीद के मानने वाले तौहीद पर खुली दलील रखते हैं)**, उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे** (कि उसके कुछ साझी भी हैं)(15) **और** (फिर आपस में कहा कि) **जब तुम उन लोगों से अक़ीदे ही में अलग हो गये और उनके माबूदों** (की इबादत) **से भी** (अलग हो गये हो) **मगर अल्लाह से** (अलग नहीं हुए,

बल्कि उसी की वजह से सब को छोड़ा है) **तो अब** (अच्छा यह है कि) **तुम** (उस) **ग़ार में** (जिसे मशवरे से तय किया होगा) **चल कर पनाह लो** (ताकि अमन और बेफ़िक्री के साथ अल्लाह की इबादत कर सको) **तुम पर तुम्हारा रब अपनी रहमत फैला देगा और तुम्हारे लिए तुम्हारे इस काम में कामयाबी के सामान ठीक** (कर देगा और आसानी) **कर देगा**(16)।

नोटः- असहाबे कहफ़ कौन थे कहां हुए इसका कोई सबूत नहीं बस इतना पता चलता है कि वो हज़रात दीने हक़ पर थे और किसी बेदीन ज़ालिम बादशाह की हूकूमत से हिजरत करके उन्होंने दीन की ख़ातिर किसी ग़ार में पनाह ली जहां क़ुदरत के करिशमों से बहुत सालों सोते रहे। और जब जागे तो नेक बादशाह की हुकूमत थी।

وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ
فَجْوَةٍ مِّنْهُ ط ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ط مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ج وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾ وَ
تَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ق وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ق وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ط
لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾ وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ط قَالَ
قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ط قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ط قَالُوْا رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ط فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ
بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾ اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾

आयत न० 17 से 20

और (ऐ लोगों वो गुफ़ा ऐसी जगह पर है कि) **जब धूप निकलती है तो तुम उसको देखोगे कि वो गुफ़ा से दाहिनी तरफ़ से बची रहती है** (यानी गुफ़ा के दरवाज़े से दाहिनी तरफ़ अलग को रहती है) **और जब वो छुपती है तो** (गुफ़ा के) **बाईं तरफ़ हटी रहती है** (यानी उस वक़्त भी गुफ़ा के अन्दर धूप नहीं जाती ताकि उनको धूप की गर्मी से तकलीफ़ न पहुंचे) **और वो लोग उस ग़ार के एक खुले हिस्से में** (सोये हुए) **थे, यह अल्लाह तआ़ला की निशानियों में से** (एक निशानी) **है** (कि ऐसी जगह उनके आराम का ऐसा सामान कर दिया, बस मालूम हुआ कि) **जिसको अल्लाह**

हिदायत दे वो ही हिदायत पाता है और जिसको वो गुमराह कर दे तो आप उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाएंगे(17) **और** (ऐ लोगों अगर) **तुम** (उनको उस वक़्त देखते जब कि वो गुफ़ा में सोते थे तो) **उनको जागता हुआ समझते हालांकि वो सोते थे** (क्योंकि अल्लाह की क़ुदरत ने उनको नींद के आसार और निशानियों से बचाए रक्खा), **और** (उस नींद के लम्बे ज़माने में बिना ख़ुराक ज़िन्दा रहना ही एक करिशमा है और) **हम उन को** (कभी) **दाहिनी तरफ़ और** (कभी) **बाईं तरफ़ करवट देते थे** (ताकि एक करवट पड़े रहने से जिस्म ख़राब न हो जाए) **और** (उस हालत में) **उन का कुत्ता** (जो किसी वजह से उन की साथ आगया था गुफ़ा की) **दहलीज़** (यानी चौखट) **पर अपने दोनो हाथ फैलाए हुए** (बैठा) **था,** (और उनके रौब और ख़ुदा के जलाल की यह हालत थी कि) **अगर तुम** (लोग) **उन को झांक कर देखते तो उन से पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे** (दिल के) **अन्दर उनकी दहशत समा जाती** (ये सब उनकी हिफ़ाज़त के सामान थे)(18) **और** (जिस तरह हमने अपनी क़ुदरत से उनको इतने लम्बे ज़माने तक सुलाया) **इसी तरह** (इस लम्बी नींद के बाद) **हमने उनको जगा दिया ताकि** (इस बारे में) **वो आपस में पूछ गच्छ करें** (यानी आपस में सवाल जवाब के बाद उनको अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और हिकमत का पता चले, जैसा कि) **उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि** (इस नींद की हालत में) **तुम कितनी देर रहे होंगे,** (जवाब में) **कुछ ने कहा कि एक दिन या एक दिन से भी कुछ कम रहे होंगे दूसरों ने कहा कि** (इस खोजबीन की क्या ज़रूरत है) **यह तो** (ठीक-ठीक) **तुम्हारे रब ही को पता है कि तुम कितनी देर** (सोते) **रहे, अब** (इस बेकार बहस को छोड़ कर ज़रूरी काम करना चाहिए वो यह कि) **अपने में से किसी को यह रूपया देकर शहर की तरफ़ भेजो फिर** (वो वहां पहुंच कर) **पता करे कि कौन सा खाना हलाल है** (क्योंकि उन की क़ौम बुत परस्त थी और बहुत से लोग बुतों के नाम से ज़बह करते थे और बाज़ार में ये ही हराम गोश्त बिकता था) **तो वो उसमें से तुम्हारे पास कुछ खाना ले आए और काम होशियारी से करे** (कि कोई उस को पहचाने नहीं) **और किसी को तुम्हारा पता न होने दे**(19) (क्योंकि) **अगर वो लोग** (यानी शहर वाले जिनको अपनी सोच में अपने ज़माने के मुशरिक समझे हुए थे) **कहीं तुम्हारा पता पाजाएंगे तो तुम को पथराव करके मार डालेंगे या तुम को अपने दीन में वापस लाने के लिए मजबूर करेंगे और ऐसा हुआ तो तुम को कभी कामयाबी न होगी**(20)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि कहीं नई जगह जाए तो पहले जान लेना चाहिए कि खाना हलाल भी है या

नहीं दूसरे यह कि अगर कुछ साथी मिलकर खाने का साझे में इन्तिज़ाम करलें तो यह जाइज़ है भले ही कोई कम खाए या कोई ज़्यादा खाए।

وَ كَذٰلِكَ اَعۡثَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ لِيَعۡلَمُوۡۤا اَنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ اَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيۡبَ فِيۡهَا ‌ۚ اِذۡ يَتَنَازَعُوۡنَ بَيۡنَهُمۡ اَمۡرَهُمۡ
فَقَالُوا ابۡنُوۡا عَلَيۡهِمۡ بُنۡيَانًا ‌ؕ رَبُّهُمۡ اَعۡلَمُ بِهِمۡ‌ ؕ قَالَ الَّذِيۡنَ غَلَبُوۡا عَلٰٓى اَمۡرِهِمۡ لَنَـتَّخِذَنَّ عَلَيۡهِمۡ مَّسۡجِدًا ﴿۲۱﴾

आयत न० 21

और (हमने जिस तरह अपनी कुदरत से उन को सुलाया और जगाया) **इसी तरह हमने** (अपनी कुदरत व हिकमत से उस ज़माने के) **लोगों को उन** (के हाल) **से ख़बरदार कर दिया ताकि** (और फ़ाइदों के साथ एक फ़ाइदा यह भी हो कि) **वो लोग** (इस क़िस्से से सबक़ लेकर) **इस बात का** (पूरा) **यक़ीन कर लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और वो यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं,** (यह क़िस्सा तो असहाबे कहफ़ की ज़िन्दगी में हुआ फिर उन साहिबों ने वहीं गुफ़ा में मौत पाई तो उनके बारे में बहस हुई जिस को आगे बयान किया है कि वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि उस ज़माने के लोग उनके बारे में आपस में झगड़ रहे थे** (और बात उस गुफ़ा का मुंह बन्द करने की थी ताकि उन की लाशें हिफ़ाज़त से रहें या उनकी यादगार बनाना चाहते थे) **सो उन लोगों ने कहा कि उन** (की गुफ़ा) **के पास कोई इमारत बनवा दो,** (फिर बहस हुई कि वो इमारत क्या हो इसमें अलग-अलग राएं हुई तो झगड़े के वक़्त) **उन का रब उन** (के हाल) **को अच्छी तरह जानता था,** (आख़िर में) **जो लोग अपने काम पर ज़ोर रखते थे** (यानी हुकूमत वाले जो उस वक़्त सच्चे दीन पर थे) **उन्होंने कहा कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बना देंगे** (ताकि मस्जिद इस बात की भी निशानी रहे कि ये लोग ख़ुद इबादत करने वाले थे माबूद न थे और दूसरी इमारतों में यह खटका था कि आगे आने वाले लोग उन्हीं को माबूद न बनालें)(21)।

नोटः- अपने सोने के बहुत ज़माने बाद यानी तीन सौ साल बाद ये लोग जागे और खाने की ज़रूरत हुई तो अपने ज़माने का सिक्का लेकर एक आदमी बाज़ार गया जहां इतना पुराना सिक्का देखा गया तो शक होने पर गरिफ़्तार करके बादशाह के सामने लाया गया उस वक़्त का बादशाह नेक मुसलमान था उसने जांच पड़ताल करने के बाद उन को पहचान लिया क्योंकि उनके चले जाने का हाल पता था इस तरह उन का राज़ सब को पता चल गया और फिर उन असहाबे कहफ़

की उसी गुफ़ा में मौत हो गई फिर उस गुफ़ा के पास उनकी यादगार में एक मस्जिद बनाई गई।

मसअलाः- इस वाक़े से यह मालूम हुआ कि वलियों नेक लोगों की क़ब्रों के पास नमाज़ के लिए मस्जिद बना देना कोई गुनाह नहीं। और जिस हदीस में नबियों की क़ब्रों को मस्जिद बनाने वालों पर लानत आई है उससे मुराद ख़ुद क़ब्रों को सजदा गाह बना देना है जो सबके नज़दीक शिर्क व हराम है। (मज़हरी)

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ۚ وَ يَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّ ثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۫ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّ لَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ۝۲۲

आयत न० 22

(जिस वक़्त असहाबे कहफ़ का क़िस्सा बयान करेंगे तो) **कुछ लोग तो कहेंगे कि वो तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और कुछ कहेंगे कि वो पांच हैं छटा उन का कुत्ता है** (और) **ये लोग अटकली बातें कर रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वो सात हैं आठवां उन का कुत्ता है, आप** (उन बहस करने वालों से) **कह दीजिए कि मेरा रब उन की सही गिनती जानता है** (कि इन बातों में कोई बात सही भी है या सब ग़लत है) **उन** (की गिनती) **को** (सही-सही) **बहुत कम लोग जानते हैं,** (और इस बात में कोई ख़ास फ़ाइदा नहीं था इसलिए आयत में उनकी गिनती के बारे में कोई साफ़ फ़ैसला नहीं किया गया), **सो** (इस पर भी अगर वो लोग झगड़े से बाज़ न आएं तो) **आप इस बारे में सिवाए सरसरी बहस के ज़्यादा बहस न कीजिए** (यानी जितनी बात बता दी गई है उससे ज़्यादा बात न करें) **और आप उन** (असहाबे कहफ़) **के बारे में इन लोगों में से किसी से भी कुछ न पूछिए** (क्योंकि जितनी बात ज़रूरी थी वो वही में आ गई)(22)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि किसी भी मसअले में जितनी ज़रूरी बात है उसको साफ़ करके बयान कर दिया जाए फ़ज़ूल बहस में न उलझा जाए।

وَلَا تَقُوۡلَنَّ لِشَاۡىۡءٍ اِنِّىۡ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ۙ‏ ﴿۲۳﴾ اِلَّاۤ اَنۡ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَاذۡكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيۡتَ وَقُلۡ عَسٰٓى اَنۡ
يَّهۡدِيَنِ رَبِّىۡ لِاَقۡرَبَ مِنۡ هٰذَا رَشَدًا‏ ﴿۲۴﴾ وَلَبِثُوۡا فِىۡ كَهۡفِهِمۡ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيۡنَ وَازۡدَادُوۡا تِسۡعًا‏ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ
اَعۡلَمُ بِمَا لَبِثُوۡا ۚ لَهٗ غَيۡبُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اَبۡصِرۡ بِهٖ وَاَسۡمِعۡ ؕ مَا لَهُمۡ مِّنۡ دُوۡنِهٖ مِنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا يُشۡرِكُ فِىۡ
حُكۡمِهٖۤ اَحَدًا‏ ﴿۲۶﴾

आयत न० 23 से 26

नोटः- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लोगों ने रूह और असहाबे कहफ़ और बादशाह ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछा आपने बिना इन्शाअल्लाह कहे उन से कल जवाब देने का वादा कर लिया फिर पन्द्रह दिन तक वही न उतरी और आप को बड़ा ग़म हुआ उस वक़्त जवाब के साथ इस बात की नसीहत की गई कि हर काम के वादे से पहले इन्शाअल्लाह ज़रूर कह लिया करें।

आप किसी काम के बारे में यह न कहा कीजिए कि मैं इस को (जैसे) **कल कर दूंगा(23) मगर अल्लाह के चाहने को** (इसके साथ) **मिला दिया** (कीजिए यानी इन्शाअल्लाह भी साथ कह दिया) **कीजिए, और जब आप** (इन्शाअल्लाह कहना) **भूल जाएं** (और फिर कभी याद आए) **तो** (उसी वक़्त इन्शाअल्लाह कह कर) **अपने रब को याद कर लिया कीजिए और** (इन लोगों से यह भी) **कह दीजिए कि मुझ को उम्मीद है कि मेरा रब मुझ को** (पैग़म्बरी की दलील के लिए) **इस** (क़िस्से) **से भी बढ़ कर बात बता दे** (मतलब यह है कि तुमने मेरी पैग़म्बरी का इम्तिहान लेने के लिए ये असहाबे कहफ़ जैसे सवाल पूछे हैं जो अल्लाह तआ़ला ने वही के वास्ते से मुझे बताकर तुम्हारी तसल्ली कर दी मगर असल बात तो यह है कि अल्लाह तआ़ला ने मेरी पैग़म्बरी के सबूत के लिए इससे भी बड़े सबूत और मोजिज़े दिये हैं जिनमें सबसे बड़ी दलील तो ख़ुद क़ुरआन है जिस की एक आयत की भी सारी दुनिया मिल कर नक़ल नहीं उतार सकी)**(24) और वो लोग** (यानी असहाबे कहफ़) **अपनी गुफ़ा में तीन सौ साल और ऊपर नौ साल** (सोते) **रहे(25)** (और अगर इस सही बात को सुन कर भी वो नहीं मानते तो) **आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला उनके** (सोते) **रहने के दिनों को** (तो तुम से) **ज़्यादा जानता है** (इसलिए जो उसने बता दिया वो ही सही है और इस क़िस्से की क्या ख़ास बात है उसकी शान तो यह है कि) **सभी आसमानों और ज़मीन के राज़ का इल्म उसी को है, वो कैसा कुछ देखने वाला कैसा कुछ सुनने वाला है, उन का अल्लाह के**

सिवा कोई भी मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने हुक्म में साझी (किया) **करता है** (मतलब यह है कि न उसका कोई रोकने वाला है न साझी ऐसी बड़ी हस्ती की मुख़ालफ़त से बहुत डरना चाहिए)(26)।

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿۲۷﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ
مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ
فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۗ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا
يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۗ بِئْسَ الشَّرَابُ ۗ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ
اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۗ نِعْمَ
الثَّوَابُ ۗ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾

आयत न० 27 से 31

और (आप का काम सिर्फ़ इतना है कि) **आप के पास जो आप के रब की किताब वही के वास्ते से आती है वो** (लोगों के सामने) **पढ़ दिया कीजिए** (इससे ज़्यादा इसकी फ़िक्र में न पड़ें कि दुनिया के बड़े लोग अगर इस्लाम की मुख़ालफ़त करते रहे तो दीन को तरक़्क़ी किस तरह होगी, क्योंकि इसका अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद वादा कर लिया है और) **उसकी बातों को** (यानी वादों को) **कोई नहीं बदल सकता** (यानी सारी दुनिया के मुख़ालिफ़ भी मिलकर अल्लाह को वादा पूरा करने से नहीं रोक सकते और अल्लाह ख़ुद बदल सकते हैं मगर वो बदलेंगे नहीं), **और** (अगर आप बड़े लोगों का जी ख़ुश करने के लिए ऐसा करें जिससे अल्लाह के हुक्म छूट जाएं तो फिर) **आप अल्लाह के सिवा कोई पनाह न पाएंगे** (हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऐसा हो नहीं सकता मगर समझाने के लिए यह कहा गया है)(27) **और** (जिस तरह काफ़िरों के अमीरों से आप को बेपरवा रहने का हुक्म दिया गया है इसी तरह ग़रीब मुसलमानों के हाल पर और ध्यान देने का आप को हुक्म है कि) **आप अपने को उन लोगों के साथ जमाए रक्खो जो सुबह शाम** (यानी सदा) **अपने रब**

की इबादत सिर्फ़ उसको ख़ुश करने के लिए करते हैं (किसी दुनिया के मतलब से नहीं) **और दुनिया की ज़िन्दगी की रौनक़ की तलाश में आप की आंखें** (यानी ध्यान) **उनसे हटने न पाएं** (यानी यह न सोचें कि अमीर लोग मुसलमान हो जाएं तो इस्लाम की रौनक़ बढ़ेगी, इस आयत में बता दिया गया कि इस्लाम की रौनक़ माल व दौलत से नहीं बल्कि सच्चाई और ताबेदारी से है वो ग़रीब फ़क़ीर लोगों में हो तो भी रौनक़ इस्लाम की बढ़ेगी) **और** (ग़रीबों को मजलिस से हटा देने के बारे में) **ऐसे आदमी का कहना न मानिए जिसके दिल को हमने** (उस की हटधर्मी की सज़ा में) **अपनी याद से भूल में डाल रक्खा है और वो अपनी मनमर्ज़ी पर चलता है और उसका यह हाल** (अपनी मनमर्ज़ी पर चलना) **हद से बढ़ गया है(28) और आप** (इन काफ़िरों के अमीरों से साफ़) **कह दीजिए कि** (यह दीने) **हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से** (आया) **है सो जिसका जी चाहे ईमान लाए और जिसका जी चाहे काफ़िर रहे** (हमारा कोई नफ़ा नुक़सान नहीं बल्कि नफ़ा नुक़सान ख़ुद उसका है क्योंकि) **बेशक हमने ऐसे ज़ालिमों के लिए** (दोज़ख़ की) **आग तैयार कर रक्खी है कि उस की क़न्नातें उन को घेरे होंगी** (यानी वो क़न्नातें या पर्दे भी आग ही के हैं जैसा कि हदीस में है कि ये लोग उस घेरे से न निकल सकेंगे), **और अगर** (प्यास से बेचैन होकर) **फरियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उन की फरियाद पूरी की जाएगी जो** (देखने में तो) **तेल की तिलछट की तरह होगा** (और तेज़ गर्म ऐसा होगा कि पास लाते ही) **चेहरों को भून डालेगा** (यहां तक कि चेहरे की खाल उतर कर गिर जाएगी जैसा कि हदीस में है) **क्या ही बुरा पानी होगा, और दोज़ख़ भी क्या ही बुरी जगह होगी(29)** (यह तो ईमान न लाने का नुक़सान है और ईमान लाने का नफ़ा यह है कि) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये तो हम ऐसे नेक लोगों का बदला बर्बाद न करेंगे(30) ऐसे लोगों के लिए सदा रहने के बाग़ हैं उन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी उन को वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और हरे रंग के कपड़े बारीक और मोटे रेशम के पहनेंगे** (और) **वहां मसहरियों पर तकिये लगाए बैठे होंगे, क्या ही अच्छा बदला है, और** (जन्नत) **क्या ही अच्छी जगह है(31)।**

नोटः- कुछ काफ़िर अमीरों और रईसों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह मशवरा दिया कि आप ग़रीब और फटे हाल मुसलमानों को अपने साथ न रक्खें बल्कि मक्का और क़ुरैश के सरदारों को अपने साथ लगाएं ये लोग आप का दीन क़ुबूल कर लेंगे तो दीन को तरक़्क़ी होगी या जब हम लोग मिलने आएं तो उनको अपनी मजलिस से हटा दिया करें इस पर ये आयतें उतरीं।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّ حَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّ جَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۝٣٢
كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَ لَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْـًٔا ۙ وَّ فَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۝٣٣ وَّ كَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَ
هُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّ اَعَزُّ نَفَرًا ۝٣٤ وَ دَخَلَ جَنَّتَهٗ وَ هُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنْ تَبِيْدَ
هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۝٣٥ وَّ مَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّ لَئِنْ رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّيْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ۝٣٦ قَالَ لَهٗ
صَاحِبُهٗ وَ هُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝٣٧ لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ
رَبِّيْ وَ لَاۤ اُشْرِكُ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ۝٣٨ وَ لَوْ لَاۤ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ تَرَنِ اَنَا
اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّ وَلَدًا ۝٣٩ فَعَسٰى رَبِّيْۤ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَ يُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ
فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝٤٠ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا ۝٤١ وَ اُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ
كَفَّيْهِ عَلٰى مَاۤ اَنْفَقَ فِيْهَا وَ هِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْۤ اَحَدًا ۝٤٢ وَ لَمْ تَكُنْ
لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ مَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝٤٣ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ
عُقْبًا ۝٤٤

आयत न० 32 से 44

और आप (दुनिया की असलीयत बताने के लिए) **उनके सामने दो आदमियों का क़िस्सा बयान कीजिए** (जिनमें आपस में दोस्ती या रिश्तेदारी थी ताकि काफ़िरों की सोच ग़लत साबित हो जाए और मुसलमानों को तसल्ली हो) **उन दोनो आदमियों में से एक को** (जो कि बेदीन था) **हमने दो बाग़ अंगूर के दे रक्खे थे और दोनों** (बाग़ों) **का खजूर के पेड़ों से घिराव कर रक्खा था और उन दोनों** (बाग़ों) **के बीच में खेती भी लगा रक्खी थी(32)** (और) **दोनों बाग़ अपना पूरा फल देते थे और किसी के फल में ज़रा भी कमी न रहती थी** (जैसा कि आम बाग़ में कभी किसी पेड़ में और किसी साल पूरे बाग़ में फल कम आता है) **और उन दोनों** (बाग़ों) **के बीच नहर बहा रक्खी थी(33) और उस आदमी के पास और भी माल दौलत थी सो** (एक दिन) **अपने उस** (दूसरे) **साथी से इधर उधर की बातें करते-करते कहने लगा कि मैं तुम से माल में भी ज़्यादा हूं और लोग भी मेरे ज़्यादा हैं** (मतलब यह था कि तू मेरे तरीक़े को ग़लत और अल्लाह के नज़दीक नापसन्द कहता है तो अब तू देख ले कि कौन अच्छा है अगर तेरा दावा सही होता तो बात

इसके उलट होती क्योंकि दुशमन को कोई यूं दिया नहीं करता और दोस्त को कोई नुक़सान नहीं पहुंचाता)(34) **और वो** (अपने उस साथी को साथ लेकर) **अपने ऊपर** (कुफ़्र का) **जुर्म साबित करता हुआ अपने बाग़ में पहुंचा** (और) **कहने लगा कि मैं नहीं सोचता कि यह बाग़** (मेरी ज़िन्दगी में) **कभी भी बर्बाद होगा** (इससे पता चला कि वो अल्लाह के वजूद और हर चीज़ पर उस की क़ुदरत को नहीं मानता था बस अपने हिफ़ाज़त के सामान को देख कर ये बात कही)(35) **और** (इसी तरह) **मैं क़ियामत को नहीं सोचता कि कभी आएगी और अगर** (मान लो क़ियामत आ भी गई और) **मैं अपने रब के पास पहुंचाया गया** (जैसा तेरा मानना है) **तो ज़रूर इस** (बाग़) **से भी बहुत ज़्यादा अच्छी जगह मुझ को मिलेगी** (क्योंकि जन्नत की जगहों का दुनिया से अच्छा होने का तो तुझे भी इक़रार है और यह भी तेरा मानना है कि जन्नत अल्लाह के पसन्दीदा बन्दों को मिलेगी अगर मैं अल्लाह का पसन्दीदा न होता तो बाग़ क्यों मिलते इसलिए तुम्हारे मानने के हिसाब से भी मुझे वहां यहां से अच्छे बाग़ मिलेंगे)(36) **उस** (की ये बातें सुन कर उस) **से उसके मिलने वाले ने** (जो कि दीनदार मगर ग़रीब आदमी था) **जवाब में कहा क्या तू** (तौहीद और क़ियामत से इनकार करके) **उस** (पाक) **ज़ात के साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझ को** (पहले) **मिट्टी से पैदा किया** (यानी आदम अलैहिस्सलाम को) **फिर** (तुझ को) **मनी से फिर तुझ को सही सालिम आदमी बनाया(37) लेकिन** (इसके बावजूद तू तौहीद और क़ियामत से इनकार और कुफ़्र करता है तो किया कर) **मैं तो यह अक़ीदा रखता हूं कि वो** (यानी) **अल्लाह तआ़ला मेरा** (सच्चा) **रब है और मैं अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं मानता(38) और** (चाहिए तो यह था कि अल्लाह पर नज़र करता और) **तू जिस वक़्त अपने बाग़ में पहुंचा था तो तूने यह क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वो ही होता है** (और) **बिना अल्लाह की मदद के** (किसी में) **कोई ताक़त नहीं** (जब तक अल्लाह चाहेगा यह बाग़ रहेगा और जब चाहेगा वीरान हो जाएगा), **अगर तू मुझ को माल व औलाद में कम देखता है** (इससे तुझ को अपने बारे में अल्लाह का चहेता होने का शक हो गया है)(39) **तो मुझ को वो वक़्त नज़दीक लगता है कि मेरा रब मुझ को तेरे बाग़ से अच्छा बाग़ देदे** (चाहे दुनिया ही में या आख़रत में) **और इस** (तेरे बाग़) **पर कोई नसीबी आफ़त आसमान से भेज दे जिससे वो बाग़ अचानक एक साफ़ मैदान होकर रह जाए(40) या उससे उसका पानी** (जो नहर में बहता है) **बिल्कुल अन्दर** (ज़मीन में) **उतर** (कर सूख) **जाए फिर तू उस** (के दोबारा लाने और निकालने) **की कोशिश भी न कर सके(41) और** (इस बातचीत के बाद यह क़िस्सा हुआ कि) **उस आदमी के सामान को तो आफ़त ने आ घेरा बस उसने जो कुछ बाग़ पर ख़र्च किया था उस**

पर हाथ मलता रह गया और बाग़ अपनी छतरियों पर गिरा हुआ पड़ा था और कहने लगा क्या अच्छा होता कि मैं अपने रब के साथ किसी को साझी न मानता (इससे पता चला कि बाग़ पर आफ़त आने से वो यह समझ गया कि यह मुसीबत कुफ़्र व शिर्क की वजह से आई है अगर कुफ़्र न करता तो यह मुसीबत ही न आती और आ भी जाती तो उसका बदला आख़रत में मिलता, मगर इस पछतावे से ईमान साबित नहीं होता)(42) **और उसके पास ऐसा कोई जत्था न हुआ जो अल्लाह के सिवा उसकी मदद करता** (उसको अपने लोगों और औलाद पर घमन्ड था वो भी ख़त्म हुआ) **और न वो ख़ुद** (हम से) **बदला ले सका**(43) **ऐसे मौक़े पर** (आदमी को पता चलता है कि) **मदद करना तो अल्लाह सच्चे ही का काम है,** (और आख़रत में भी) **उसी का सवाब सबसे अच्छा है और** (दुनिया में भी) **उसी का नतीजा सबसे अच्छा है** (यानी ईमान वालों का कोई नुक़सान हो जाता है दोनो जहान में उसका फल नेक मिलता है इसके उलट काफ़िर कि बिल्कुल नुक़सान में रह गया)(44)।

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी कोई चीज़ देखे और वो उस को पसन्द आए तो अगर उसने यह कलिमा कह लिया ‘‘माशाअल्लहु ला कुव्वता इल्ला बिल्लाह’’ तो उसको कोई चीज़ नुक़सान न पहुंचाएगी (यानी वो पसन्दीदा चीज़ हिफ़ाज़त से रहेगी) और एक हदीस में है कि बुरी नज़र न लगेगी। (शाबुल ईमान)

وَ اضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا
تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿۴۵﴾ اَلْمَالُ وَ الْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ الْبٰقِيٰتُ
الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّ خَيْرٌ اَمَلًا ﴿۴۶﴾ وَ يَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَ تَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّ حَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ
نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿۴۷﴾ ۚ وَ عُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ ٞ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ
نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿۴۸﴾ وَ وُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَ يَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا
الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَ وَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَ لَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿۴۹﴾ ع

आयत न० 45 से 49

और आप इन लोगों से दुनिया की ज़िन्दगी की हालत बयान कीजिए कि वो ऐसी है

जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया हो फिर उस (पानी से) **ज़मीन की पैदावार ख़ूब घनी हो गई हो फिर वो** (बाद इसके कि वो हरी भरी तरो ताज़ा थी सूख कर) **चूरा-चूरा हो जाए कि उस को हवा उड़ाए लिए फिरती हो** (ये ही हाल दुनिया का है कि आज हरी भरी दिखाई देती है कल उस का नामो निशान भी न रहेगा), **और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखते हैं** (जब चाहें पैदा करें तरक़्क़ी दें और जब चाहें ख़त्म कर दें)(45) **माल और औलाद दुनियवी ज़िन्दगी की एक रौनक़ है** (तो जब दुनिया का ऐसा हाल है जो ऊपर बयान हुआ तो माल और औलाद तो और भी ज़्यादा जल्दी ख़त्म होने वाले हैं), **और जो नेक काम** (सदा-सदा को) **बाक़ी रहने वाले हैं वो आप के रब के यहां** (यानी आख़िरत में इस दुनिया से) **सवाब में भी** (हज़ारों गुना) **बढ़ कर हैं और उम्मीद में भी** (हज़ारों गुना) **बढ़ कर हैं** (यानी नेक कामों से जो उम्मीदें जुड़ी होती हैं वो आख़िरत में ज़रूर पूरी होंगी और उसकी उम्मीद से भी ज़्यादा सवाब मिलेगा जब कि दुनिया की पूंजी से दुनिया में भी इन्सान की उम्मीदें पूरी नहीं होती और आख़िरत में तो कोई सवाल ही नहीं)(46) **और** (उस दिन को याद करना चाहिए) **जिस दिन हम पहाड़ों को** (उनकी जगह से) **हटा देंगे** (यह शुरू में होगा फिर वो चूरा-चूरा हो जाएंगे) **और आप ज़मीन को देखेंगे कि एक खुला मैदान पड़ा है** (क्योंकि पहाड़, पेड़ मकान कुछ बाक़ी न रहेगा) **और हम उन सब को** (क़ब्रों से उठा कर हिसाब के मैदान में) **जमा कर देंगे और उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे** (कि वहां न लाया जाए)(47) **और सब के सब आप के रब के सामने** (यानी हिसाब की जगह) **बराबर खड़े करके पेश किये जाएंगे** (यह शक न रहेगा कि कोई किसी की आड़ में छुप जाए, और उनमें जो क़ियामत का इनकार करते थे उन से कहा जाएगा कि) **देखो आख़िर तुम हमारे पास** (दोबारा पैदा होकर) **आगये जैसा हमने तुम को पहली बार** (यानी दुनिया में) **पैदा किया था** (मगर तुम पहली पैदाइश देख लेने के बावजूद इस दूसरी पैदाइश को नहीं मानते थे) **बल्कि तुम ये ही समझते रहे कि हम तुम्हारे** (दोबारा पैदा करने के) **लिए कोई वक़्त लौटाकर न लाएंगे**(48) **और आमाल नामा** (हाथ में देकर उसके सामने खुला हुआ) **रख दिया जाएगा तो आप मुजरिमों को देखेंगे कि उसमें जो कुछ** (लिखा) **होगा** (उसको देख कर) **उससे** (यानी उसकी सज़ा से) **डरते होंगे और कहते होंगे कि हाय हमारी बदनसीबी यह आमाल नामा कैसा है कि बेलिखे हुए न कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा, और जो कुछ उन्होंने** (दुनिया में) **किया था वो सब** (लिखा हुआ) **मौजूद पाएंगे, और आप का रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा** (कि न किया हुआ गुनाह लिखले या की हुई नेकी जो शर्तों के साथ की जाए उसको न लिखे)(49)।

नोटः- हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि खेती दो क़िस्म की होती है। दुनिया की खेती तो माल व औलाद है और आख़रत की खेती बाक़ी रहने वाली नेकियां हैं।

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ
ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَ هُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَآ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ
لَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَ مَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَ جَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَ رَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَ
لَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ
شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾ وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَ يَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ
الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَ مَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَ مُنْذِرِيْنَ ۚ وَ يُجَادِلُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَ اتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَ مَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ
رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَ نَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ
اِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَ رَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا
لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا ﴿٥٨﴾ وَ تِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا
وَ جَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾

आयत न० 50 से 59

और (वो वक़्त भी याद करो) **जब कि हमने फ़रिशतों को हुक्म दिया कि आदम** (अलैहिस्सलाम) **के सामने सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए इबलीस के, कि वो जिन्नात में से था उसने अपने रब का हुक्म न माना, तो क्या फिर भी तुम उस को और उस की औलाद** (और मददगारों) **को दोस्त बनाते हो मुझ को छोड़ कर** (यानी मेरी ताबेदारी छोड़ कर उसके कहने पर चलते हो) **हालांकि वो** (इबलीस और उस का गिरोह) **तुम्हारे दुशमन** (हैं कि हर वक़्त तुम्हें नुक़सान पहुंचाने की फ़िक्र में रहते) **हैं, यह** (इबलीस और उस की औलाद की दोस्ती) **ज़ालिमों के लिए बहुत बुरा बदल** (है बदल इसलिए कहा कि दोस्त तो बनाना चाहिए था मुझे,

लेकिन उन्होंने मेरे बदले शैतान को दोस्त बना लिया, बल्कि दोस्त ही नहीं उस को ख़ुदाई का साझी भी मान लिया) **है**(50) (हालांकि) **मैंने उन को न तो आसमान व ज़मीन के पैदा करने के वक़्त** (अपनी मदद या मशवरे के लिए) **बुलाया और न ख़ुद उनके पैदा करने के वक़्त** (बुलाया यानी एक के पैदा करने के वक़्त दूसरे को नहीं बुलाया), **और मैं ऐसा** (लाचार) **न था कि** (किसी को ख़ास कर) **भटकाने वालों को** (यानी शैतानों को) **अपना मददगार बनाता** (यानी मदद की ज़रूरत तो उस को होती है जो ख़ुद क़ुदरत न रखता हो)(51) **और** (तुम यहां उनको ख़ुदाई का साझी समझते हो क़ियामत में असलीयत पता चलेगी) **उस दिन को याद करो कि अल्लाह तआ़ला** (मुशरिकों से) **कहेगा कि जिन को तुम हमारा साझी समझा करते थे उन को** (अपनी मदद के लिए) **पुकारो तो** (जब) **वो पुकारेंगे तो वो उनको जवाब ही न देंगे और हम उनके बीच में एक दीवार कर देंगे** (जिससे बिल्कुल ही ना उम्मीद हो जाएं वर्ना बिना दीवार के भी वो मदद नहीं कर सकते)(52) **और मुजरिम लोग दोज़ख़ को देखेंगे फिर यक़ीन करेंगे कि वो उसमें गिरने वाले हैं और उससे बचने का कोई रास्ता नहीं पाएंगे**(53) **और हमने इस क़ुरआन में लोगों** (की हिदायत) **के वास्ते हर क़िस्म की अच्छी-अच्छी बातें तरह-तरह से बयान की हैं, और** (इस पर भी इनकार करने वाला) **आदमी झगड़ने में सबसे बढ़ कर है**(54) **और लोगों को जबकि हिदायत पहुंच चुकी** (इसलिए चाहिए था कि ईमान ले आते) **ईमान लाने से और अपने रब से** (कुफ़्र और गुनाह से) **मुआफ़ी मांगने से और कोई रूकावट नहीं सिवाए इसके कि उन को इसका इन्तिज़ार हो कि पहले लोगों के से क़िस्से** (सज़ा के) **उनके साथ भी हों या यह कि अज़ाब उनके सामने खड़ा हो** (मतलब यह है कि उनके हालात से यह समझा जाता है कि बस अज़ाब ही का इन्तिज़ार है और सब दलीलें पूरी हो चुकीं)(55) **और पैग़म्बरों को तो सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा करते** (हैं जिस के लिए मोजिज़ों के सबूत उनके साथ कर दिये जाते) **हैं** (इससे ज़्यादा उनसे मांग करना जहालत है), **और काफ़िर लोग नाहक़ की बातों का सहारा लेकर झगड़े निकालते हैं ताकि उसके वास्ते से हक़ बात को बिचला दें और उन्होंने मेरी आयतों को और जिस** (अज़ाब) **से उन को डराया गया था उस को दिल्लगी बना रक्खा है**(56) **और उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जिसको उसके रब की आयतों से नसीहत की जाए फिर वो उससे मुंह मोड़े और जो कुछ अपने हाथों** (गुनाह) **समेट रहा है उस** (के नतीजे) **को भूल जाए, हमने उस** (हक़ बात) **के समझने से उनके दिलों पर पर्दे डाल रक्खे हैं** (और उस के सुनने से) **उनके कानों में डाट लगा दी है, और** (इस वजह से उनका हाल यह है कि) **अगर आप उनको सही**

रास्ते की तरफ़ बुलाएं तो हरगिज़ भी राह पर न आएं (क्योंकि कानों से हक़ बात सुनते नहीं, दिलों से समझते नहीं इसलिए आप ग़म न करें)(57) **और** (अज़ाब में देरी की वजह से जो वो यह सोच रहें हैं कि अज़ाब आएगा ही नहीं तो वजह उसकी यह है कि) **आप का रब बड़ा मुआफ़ करने वाला बड़ा रहमत वाला है** (इसलिए मोहलत दे रक्खी है कि अब उनको होश आजाए और ईमान ले आएं तो उनको मुआफ़ कर दिया जाए, वर्ना उनके कारनामे तो ऐसे हैं कि) **अगर उनको उनके** (बुरे) **कामों की वजह से पकड़ने लगता तो उनको फ़ौरन ही अज़ाब दे देता** (मगर ऐसा नहीं करता)**, बल्कि उनके** (अज़ाब के) **वास्ते एक वक़्त तय है** (यानी क़ियामत का दिन) **जिससे बचने की कोई पनाह की जगह नहीं पा सकते** (यानी उस वक़्त के आने से पहले किसी पनाह की जगह में जा छुपें और उससे बचे रहें)(58) **और** (ये ही बरताव पहले काफ़िरों के साथ भी हुआ जैसा कि) **ये बस्तियां** (जिनके क़िस्से मशहूर हैं) **जब उन्होंने** (यानी उनके बसने वालों ने) **शरारत की तो हम ने उनको हलाक कर दिया और हमने उन के हलाक होने के लिए वक़्त तय किया था** (इसी तरह इन मौजूदा लोगों के लिए भी वक़्त तय है)(59)।

नोटः- सारी मख़लूक़ों में सबसे ज़्यादा झगड़ालू इन्सान हैं कि उनमें से कुछ लोग मैदाने हश्र में भी बहस करेंगे और आमाल नामे को मानने से इनकार कर देंगे आख़ीर में उनके हाथ पैर उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَاۤ اَبْرَحُ حَتّٰۤى اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَیْنِ اَوْ اَمْضِیَ حُقُبًا ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ
بَیْنِهِمَا نَسِیَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿۶۱﴾ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا٘ لَقَدْ
لَقِیْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿۶۲﴾ قَالَ اَرَءَیْتَ اِذْ اَوَیْنَاۤ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّیْ نَسِیْتُ الْحُوْتَ٘ وَ مَاۤ اَنْسٰىنِیْهُ اِلَّا
الشَّیْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَ اتَّخَذَ سَبِیْلَهٗ فِی الْبَحْرِ ۖۗ عَجَبًا ﴿۶۳﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖۗ فَارْتَدَّا عَلٰۤى اٰثَارِهِمَا
قَصَصًا ﴿۶۴﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَاۤ اٰتَیْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ عَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿۶۵﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى
هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰۤى اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿۶۶﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِیْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿۶۷﴾ وَ كَیْفَ تَصْبِرُ عَلٰى
مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿۶۸﴾ قَالَ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّ لَاۤ اَعْصِیْ لَكَ اَمْرًا ﴿۶۹﴾ قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِیْ فَلَا
تَسْـَٔلْنِیْ عَنْ شَیْءٍ حَتّٰۤى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿۷۰﴾ ع

आयत न० 60 से 70

नोटः- एक बार हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से लोगों ने पूछा कि इस वक़्त आदमियों में सबसे बड़ा आलिम कौन है आपने कहा "मैं" मतलब यह था कि इल्मे शरीअत में मेरे बराबर कोई नहीं और यह कहना सही था इसलिए कि आप बड़े पैग़म्बर थे आप के बराबर दूसरे को यह इल्म नहीं था मगर अल्लाह तआ़ला को यह बात पसन्द नहीं आई। चाहिए यह था कि यह कह देते कि अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं कि सारी दुनिया में सबसे बड़ा आलिम कौन है। तो मूसा अलैहिस्सलाम पर वही आई हमारा एक बन्दा जो दो दरियाओं के मेल पर है वो आप से ज़्यादा इल्म रखता है मतलब यह था कि कुछ इल्मों में वो ज़्यादा है। मूसा अलैहिस्सलाम ने उनके मिलने का पता पूछा बताया गया कि बेजान मच्छली अपने साथ लेकर सफ़र करो जहां वो मच्छली गुम हो जाए वो आदमी वहीं पर है। उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम ने योशे बिन नून अलैहिस्सलाम को साथ लिया और चल दिये। इन आयतों में इसी क़िस्से का बयान हैः-

और (वो वक़्त याद करो) **जब कि मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने ख़ादिम** (योशे बिन नून) **से कहा कि मैं** (इस सफ़र में) **बराबर चलता रहूंगा यहां तक कि उस मौक़े पर पहुंच जाऊं जहां दो दरिया आपस में मिले हैं या यूंही बरसों चलता रहूंगा(60) बस जब** (चलते-चलते) **दोनो दरियाओं के संगम पर पहुंचे** (वहां किसी पत्थर से टेक लगा कर सो गये और वो मच्छली अल्लाह तआ़ला के हुक्म से ज़िन्दा होकर दरिया में चली गई, योशे अलैहिस्सलाम ने सोचा जब मूसा अलैहिस्सलाम जागेंगे तो यह बात बता दूंगा मगर उनको याद न रहा और मूसा अलैहिस्सलाम को भी पूछने का ध्यान न रहा इस तरह से) **उस अपनी मच्छली को दोनो भूल गये और मच्छली ने** (इससे पहले ज़िन्दा होकर) **दरिया में** (सुरंग की तरह) **अपना रास्ता** (बना) **लिया और चल दी(61) फिर जब दोनो** (वहां से) **आगे बढ़ गये** (और दूर निकल गये) **तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने ख़ादिम से कहा कि हमारा नाशता तो लाओ हम को तो इस सफ़र** (यानी आज के सफ़र) **में बड़ी तकलीफ़ पहुंची है** (और इससे पहले थके नहीं थे जिसकी वजह असल जगह से आगे बढ़ जाना होगी)(62) **ख़ादिम ने कहा कि लीजिए देखिए** (अचम्भे की बात हुई) **जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे** (और सो गये थे उस वक़्त यह क़िस्सा हुआ) **सो मैं उस मच्छली** (की बात बताने) **को भूल गया और मुझ को शैतान ही ने भुला दिया कि मैं उस को बताता और** (वो क़िस्सा यह हुआ कि) **उस मच्छली ने** (ज़िन्दा होने के बाद) **दरिया में अजीब तरह अपना रास्ता लिया** (एक

तो ख़ुद ज़िन्दा हो जाना दूसरे पानी में उस के लिए सुरंग का बन जाना)(63) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह बात सुनकर) **कहा कि ये ही वो जगह है जिसकी हम को तलाश थी** (वहां ही लौटना चाहिए) **सो दोनों अपने पैरों के निशान देखते हुए उल्टे लौटे** (यानी वो रास्ता सीधा न होगा इसलिए निशान देखने पड़े)(64) **सो** (वहां पहुंच कर) **उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे** (यानी ख़िज़्र) **को पाया जिन को हम ने अपनी ख़ास रहमत दी थी** (यानी वली या पैग़म्बर थे) **और हमने उनको अपने पास से** (यानी बिना उनकी कोशिश के) **एक ख़ास क़िस्म का इल्म सिखाया था** (यानी छुपी बातों का इल्म जिसका आगे पता चलेगा और यह शरीअत का इल्म नहीं इस इल्म में तो मूसा अलैहिस्सलाम बढ़े हुए थे)(65) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उन को सलाम किया और उनसे) **कहा कि मैं आप के साथ रह सकता हूं** (यानी आप मुझे अपने साथ रहने की इजाज़त दीजिए) **इस वास्ते कि जो भलाई का इल्म आप को** (अल्लाह की तरफ़ से) **सिखाया गया है उसमें से आप मुझ को भी सिखादें(66) उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया आप मेरे साथ रह कर** (मेरे कामों पर) **सब्र न कर सकेंगे** (यानी आप मुझ पर रोक टोक करेंगे)(67) **और** (भला) **ऐसी बातों पर** (रोक टोक करने से) **आप कैसे सब्र करेंगे जिन की आप को पूरी-पूरी जानकारी नहीं है** (यानी देखने में वो बातें मन्शा और मतलब पता न होने की वजह से शरीअत के ख़िलाफ़ दिखाई देंगी और आप शरीअत के ख़िलाफ़ बातों पर चुप न रह सकेंगे)(68) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (नहीं) **इन्शाअल्लाह आप मुझ को साबिर** (यानी सहार करने वाला) **पाएंगे और मैं किसी बात में आप के हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं** (करूंगा यानी जैसे अगर रोक टोक से मना करेंगे मैं रोक टोक न करूंगा इसी तरह और किसी बात में भी ख़िलाफ़ न) **करूंगा(69) उन बुज़ुर्ग ने कहा कि** (अच्छा) **तो अगर आप मेरे साथ रहना चाहते हैं तो** (इतना ध्यान रहे कि) **मुझ से किसी बात के बारे में कुछ पूछना नहीं जब तक कि उसके बारे में मैं ख़ुद ही उस का ज़िक्र शुरू न कर दूं(70)।**

नोटः- ख़िज़्र अलैहिस्सलाम को कुछ बातों में मूसा अलैहिस्सलाम से ज़्यादा इल्म होने से यह साबित नहीं होता कि वो मूसा अलैहिस्सलाम से रूतबे में बड़े हैं। फिर ख़िज़्र अलैहिस्सलाम का इल्म तकवीनी है। और मूसा अलैहिस्सलाम का इल्म तशरीई है जो असल है। जिसके लिए पैग़म्बरों को भेजा जाता है।

فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾ قَالَ
اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾
فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ؕ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

आयत न० 71 से 74

(बस आपस में वादा हो गया) **फिर दोनों** (किसी तरफ़) **चले** (उम्मीद है कि उनके साथ योशे अलैहिस्सलाम भी होंगे मगर वो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ताबे थे इसलिए दो की बात की गई) **यहां तक कि** (चलते चलते किसी ऐसी जगह पर पहुंचे जहां कशती पर सवार होने की ज़रूरत हुई) **जब दोनों कशती में सवार हुए तो उन बुज़ुर्ग ने उस कशती** (का एक तख़्ता निकाल कर उस) **में छेद कर दिया, मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या आप ने इस कशती में इसलिए छेद किया है कि इसके बैठने वालों को डुबा दें आपने बड़ी भारी** (ख़तरे की) **बात की(71) उन बुज़ुर्ग ने कहा मैंने कहा था कि आप से मेरे साथ सब्र न हो सकेगा** (आख़िर वो ही हुआ आप अपने वादे पर जमे न रहे)(72) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (मैं भूल गया था) **आप मेरी भूल-चूक पर पकड़ न कीजिए और मेरे काम को ज़्यादा मुश्किल न बनाइये** (कि भूल-चूक भी मुआफ़ न हो, बात आई गई हो गई)(73) **फिर दोनो** (कशती से उतर कर आगे) **चले यहां तक कि जब एक** (कम उम्र) **लड़के से मिले तो उन बुज़ुर्ग ने उस को मार दिया, मूसा** (अलैहिस्सलाम घबरा कर) **कहने लगे आप ने एक बेगुनाह जान को क़त्ल कर दिया** (और वो भी) **बिना बदले किसी जान के, बेशक आप ने बड़ी बेजा हरकत की** (एक तो यह नाबालिग़ का क़त्ल है जिस को सज़ा में भी क़त्ल करना जाइज़ नहीं फिर उसने तो किसी को क़त्ल भी नहीं किया यह काम पहले से भी ज़्यादा सख़्त है)(74)।

नोटः- लिखा है कि कशती में छेद हो जाने के बाद भी पानी कशती में नहीं आया यह उन बुज़ुर्ग हस्तियों का मोजिज़ा होगा।